साप्ताहिक
शहर सत्ता
PRGI NO. CTHIN/25/A2378
सोमवार, 30 मार्च से 05 अप्रैल 2026
हम दिखाएंगे आईना...
वर्ष : 02 अंक : 04 पृष्ठ : 12 मूल्य : 5 रुपए
www.shaharsatta.com

पेज 08 में...
आवश्यक वस्तुओं की कालाबाजारी पर सीएम सख्त

पेज 03 में...
LPG सप्लाई को लेकर उद्योगपतियों से चर्चा

पेज 04 अफीम के बाद गांजा : कलेक्टरों की जांच रिपोर्ट पर उठे सवाल

ख़ौफ़; दम तोड़ता मैदान छोड़ता...

नक्सलियों का गढ़ 'माड़' डिवीजन को खत्म करने में 149 जवानों ने दी कुर्बानी

माओवादियों के साम्राज्य को समाप्त करने में केंद्र और राज्य को 35 वर्ष लग गए

पीड़ित परिवारों के लिए नासूर बन चुकि है दर्दनाक, हौलनाक और खौफनाक यादें

लाल आतंक के खौफ के खात्मे का काउंट डाउन शुरू

अब सिर्फ 48 घंटे शेष

मुख्य संवाददाता/प्रदीप चंद्रवंशी
मोबाईल नंबर 7000681023

छत्तीसगढ़ में लाल आतंक का खौफ खत्म होने का काउंट डाउन शुरू है। सिर्फ 48 घंटे बाद माओवादियों के हाथों बेरहमी से मारे गए फ़ोर्स के अफसर-जवानों, भोले-भाले वनवासियों और ग्रामीणों की आत्मा को शांति मिल जाएगी। लाल आतंक यूं तो अंतिम सांसें गिन रहा है, लेकिन नासूर बन चुके इस माओवाद की दर्दनाक, हौलनाक और खौफनाक यादें 1980 से छत्तीसगढ़ियों के जेहन में आज भी हैं। धीरे धीरे राज्य के अन्य जिलों में इस आतंक की 1985 से 1988 के बीच बुनियाद मजबूत हुई थी। अब 48 घंटे बाद यानि कि 31 मार्च 2026 को छत्तीसगढ़ नक्सलवाद मुक्त हो जायेगा। शहर सत्ता टीम ने रक्त पिपासु आतंक की भूली बिसरी बेसाख्ता सी यादों और उन दुर्दांत हादसों को अपने खून से सींचकर इस चमन में अमन लाने के लिए शहादत पाए उन्हें कोटिश नमन करता है। उम्मीद है कि अब बस्तर और प्रभावित क्षेत्रों में बचेखुचे 19 लाल लड़ाके भी खून की होली नहीं खेल पाएंगे।

शहर सत्ता/रायपुर। बस्तर संभाग के नारायणपुर जिले का माड़ इलाका नक्सलियों का सबसे मजबूत किला माना जाता था। दुर्दांत नक्सली यहां पनाह पाते थे। नक्सलियों के सबसे मजबूत किले माने जाने वाले नारायणपुर जिले को नक्सलमुक्त करना नहीं बल्कि इनके पूरे साम्राज्य को समाप्त करने में 35 वर्ष लग गए। आतंक के गढ़ माड़ से लेकर राजनांदगांव और फिर पूरे छत्तीसगढ़ को अपनी वारदातों से सिहराने वाले ज्यादातर दम तोड़ चुके हैं या मैदान छोड़ चुके हैं। लाल आतंक के अंत की इबारत असल में नांदगांव में लिखी गई थी।

बस्तर संभाग के नारायणपुर जिले का माड़ इलाका नक्सलियों का सबसे मजबूत किला माना जाता था। दुर्दांत नक्सली यहां पनाह पाते थे। नक्सलियों के सबसे मजबूत किले माने जाने वाले नारायणपुर जिले को नक्सलमुक्त करना नहीं बल्कि इनके पूर साम्राज्य को समाप्त करने में 35 वर्ष लग गए। कभी छत्तीसगढ़ की रक्तिम पहचान बना माओवादी व उनकी विचारधारा अब आखिरी सांस रही है। यह वक्त उन शहीदों को नमन करने का है जिन्होंने अपना जीवन न्योछावर कर दिया ताकि हम यह दिन देख सकें। राजनांदगांव के बाद दूसरी कहानी बस्तर संभाग के नारायणपुर जिले की जो कुछ समय पहले तक नक्सलियों का सबसे महफूज व मजबूत इलाका माना जाता था। यहां नक्सल संगठन के माड़ डिवीजन की तूती बोलती थी। बाहरी लोगों को तो यहां आने की मनाही थी। यहां तक कि स्थानीय बाशिदों को भी पूरी पड़ताल के बाद ही गांव में जाने के लिए एंट्री मिलती थी। इसके अलावा बाहरी व सरकारी कर्मचारियों की पूरी इन्कवारी की जाती थी जिसके बाद ही उन्हें अनुमति मिलती थी। आज माड़ का यह पूरा इलाका नक्सलमुक्त होने की कगार पर है। लेकिन इसे नक्सलियों से मुक्त करने में शहीद हुए पुलिस अधिकारियों व जवानों की लंबी फेहरिस्त है जिन्होंने अबूझमाड़ को शांति के लिए अपना बलिदान दिया। उन शहीदों के नाम जिनकी शहदात ने हमें आतंक से मुक्ति दिलाई। पहली कहानी राजनांदगांव के उन शहीदों की जिन्होंने मानपुर की गलियों में, मदनवाड़ा के जंगलों में अपना 'आज' हमारे 'कल' के लिए न्योछावर कर दिया।

बीहड़ जंगल में 29 कैंप के जरिये घेराबंदी

नक्सलियों की घेराबंदी करने के लिए अविभाजित राजनांदगाव जिले में 29 कैप खेले गए। जंगल में खेले गए इस कैप के जरिये लगातार ओरेशन भी लांच किया गया। खेरागढ़ जिले में चमार इमेला घेटा, भाचे मलेवा, बुढानमाठ मोहनंद, पापरा, महुआदार कटेम, कौरवा, राजनांदगांव जिले के कन्हारगंव, कोठीटोला, जेच मोहारा, मेहला जिले में पाटनबास, चिल्हाटी परेवाडीह पानाबरस पल्लेमड़ी गेटाटोला जक्के बसेली कोटका, संबलपुर पीटेनेटा, सीतागांव, मदनवाड़ा, डोमीकला और नवागांव में पुलिस और फोर्स के तगड़ी मोर्चाबंदी की।

2006 में केंद्रीय फोर्स ने संभाली कमान

नकसलियों की घेराबंदी करने के लिए सन् 2006 में राजनांदगांव जिले में केंद्रीय फोर्स खै आरपीएफ की तैनाती की गई। तीन साल बाद जिले में आईटीसीपी फोर्स के जवानों ने मोर्चा संभाला। पुलिस और फोर्स ने नक्सलियों को मार गिरने में सफलता भी हासिल की। वही लगातार ऑपरेशन के बीच 50 से अधिक नक्सलियों में आकसमर्पण में कर दिया।

साप्ताहिक शहर सत्ता

29 की शहादत के बाद आर-पार की छिड़ी जंग

सन 2009 में एसपी वीके चौबे सहित 28 जवानों की शहादत के बाद पुलिस और फोर्स ने जिले में आर-पार की जंग का ऐलान किया। जिले में पुलिस कैंप स्थापित कर जहां लगातार ऑपरेशन लांच किए गए। वहीं कई नक्सलियों को मार गिराने में भी सफलता हासिल हुई। लगातार जंग के बीच भी नक्सलियों ने 2015 में कवर्धा जिले में अपनी उपस्थिति का अहसास कराया था। पुलिस और केंद्रीय फोर्स की तैनाती के बाद पिछले कुछ सालों से नक्सली संगठन बैकफुट पर चले गए थे। यही कारण है कि केंद्र सरकार ने पिछले साल राजनांदगांव, कवर्धा और खैरागढ़-मोहला-मानपुर जिले को नक्सल मुक्त होने की घोषणा की थी। मोहला-मानपुर-चौकी जिले में पिछले एक साल से एक दलम सक्रिय था। इस दलम ने भी पिछले दो दिन पहले आत्मसमर्पण कर अविभाजित जिले को नक्सल मुक्त कर दिया है।

रेंजर की पिटाई कर फैलाई दहशत

राजनांदगांव जिले में 1985 से 1988 के बीच अपनी बुनियाद रखनी शुरू की थी। इस दौर में वनांचल के गांव में पहुंचकर सदस्यता अभियान का आगाज किया था। हथियार के दम पर जल, जंगल और जमीन को बचाने का वायदा कर नक्सलियों ने गांवों में अपनी पैठ बनानी शुरू की थी। नक्सलियों ने 1990 में खैरागढ़ के बकरकट्टा थाना अंतर्गत एक रेंजर की बेदम पिटाई कर अपनी उपस्थिति का अहसास कराया। पुलिस ने पहला ऑपरेशन भी इस दौर पर लांच किया था। इस घटना के बाद 1996 में नक्सलियों ने मानपुर थाना को लूटा था। मानपुर थाना को लूटने के बाद नक्सलियों ने 1999 में छुरिया थाना को लूटने की कोशिश की, लेकिन पुलिस ने इस मंसूबे को सफल नहीं होने दिया।

सिर्फ राजनांदगांव जिले में 120 ग्रामीणों की हत्या

नक्सलियों ने मुखबिरी के शक में अविभाजित राजनांदगांव जिले में 120 ग्रामीणों की बेरहमी से हत्या भी की। नक्सलियों ने गांव में जनअदालत लगाकर ग्रामीणों की बेदम पिटाई कर दहशत फैलाने की कोशिश की। नक्सल मुक्त होने के बाद वनांचल के गांवों में अब दहशत का माहौल खत्म हो चुका है।

अबूझमाड़ क्षेत्र में 149 जवान अधिकारी हुए शहीद

अबूझमाड़ क्षेत्र में शांति, सुरक्षा और विकास की स्थापना के लिए अब तक कुल 149 वीर जवानों ने अपना सर्वोच्च बलिदान दिया है। इनमें सर्वाधिक 95 अधिकारी व जवान स्थानीय पुलिस बल के अलावा केंद्रीय अर्द्धसैनिक बल सीआरपीएफ के 46 व आईटीबीपी के 8 अधिकारी व कर्मी शामिल हैं। इन सभी वीरों का त्याग और समर्पण इस क्षेत्र में शांति स्थापित करने तथा आम जनजीवन को सुरक्षित बनाने के प्रयासों का आधार रहा है। उनके बलिदान ने अबूझमाड़ जैसे दुर्गम क्षेत्र में विकास और विश्वास की राह प्रशस्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

बस्तर का दण्डकारण्य था सुरक्षित ठिकाना

आंदोलन के प्रवेश के बाद से ही अबूझमाड़ का दण्डकारण्य क्षेत्र माओवादियों का एक सुरक्षित ठिकाना माना जाता रहा है। घने जंगल, पहाड़ी और दुर्गम भू-भाग, सीमित संपर्क व्यवस्था तथा विरल आबादी जैसे भौगोलिक कारणों के चलते के चलते यह क्षेत्र लंबे समय तक नक्सली गतिविधियों के लिए अनुकूल माना जाता था। इन्हीं परिस्थितियों के कारण सुरक्षा बलों को यहां शांति स्थापित करने के लिए वर्षों तक कठिन और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में कार्य करना पड़ा।

नक्सलियों ने चेकपोस्ट बनाया, बाहरी ही नहीं, स्थानीय लोगों की भी होती थी जांच

जिले में एक बड़ी घटना नारायणपुर थाना क्षेत्र में 20 फरवरी 2000 के सुबह 10:10 बजे हुई थी। बाम बकुलवाही कल के पास चढ़ाव कोववाही रोड में हुए बारूदी सुरंत विस्फोट में एडिशनल एसपी समेत 23 जवान शहीद हो गए थे। वाम जम्हारी में नक्सलियों की उपस्थिति की सूचना पर एएसपी भास्कर दिवान अपने फोर्स को आवश्यक बिफिंग कर 407 वाहन में सवार होकर सूचना की तस्दीक के लिए रवाना हुये थे। वाम कोचवाही नल के पास पहुंचे ये कि 25-30 नक्सलियों द्वारा काम कोचवाही जाला के पास बारूदी सुरंग विस्फोट किया गया जिससे 407 वाहन में सवार एएसपी भास्कर विवान और 23 जवान शहीद हो गये।

केन्द्रीय अर्धसैनिक के शहीदों में ये शामिल

नारायणपुर जिले में तैनात सीआरपीएफ चीएसएफ, आईटीबीपी एसरसबी, मिजे व नगा बालियन के शहीद जवानों में सीआरपीएफ 140 वीं बटालियन के प्रधान आरक्षक चिजजपाल, आरक्षक धर्मेन्द सिंह, जयप्रकाश, व्ही मैथ्यू सहायक सेवानी सीआरपीएफ विकास चन्द्रा प्रधान आरक्षया जगन्नाथ पेटिया दिनेश पाण्डे, प्रशात कुमार विश्वाल, सब इंसपेक्टर रोशन मिज मुस्तक अहमद, चीज कुमार एस. जय कुमार एस. एसआई आरएस कांग, के तिम्मन, रमेश चन्दपात्र करपत सिंह बोगा पातंतु कुमार दाल, वीस्थल महता, जतिन गुलाटी, एमपी सिंह विद्याधर बारीक आरएन दास सजि कुमार एस. रजन कुमार साहू, जनरल सिंह, रंजू कुमार साहा, अंजन फूकन, एस रामाराव, तारकेश्वर राय, धुबज्योति दास, तिलकराज, केएच आई सिंघा, पाणू राम नायक, तुषारबराल, नरेन्द्र मोहन झा, सोहेल राणा, आरसी हेमरम, एम कृष्णाराव, पंकज महंती, सुदामाचंद दास, अर्जुन गयारी, गोविन्द प्रधान, समीर उरांव, पंकज बडीयाल, नीरज कुमार, एल बालरा स्वामी, रामटेके मंगेश, शिव नारायण मीणा, सिंधे सुधाकर, गुरमुख सिंह, राजेन्द्र सिंह, पवार अमर, के राजेश व संतोश त्रिमाली शामिल है।

फ़ोर्स अलग लेकिन जज्बा था एक जैसा

शहीद सीएफ, डीएफ, बस्तर फाईटर, सहायक आरक्षक, गोपनीय सैनिक व नगर सैनिक भले ही अलग अलग फ़ोर्स से आते थे, लेकिन इन सभी का जज्बा एक सामान था। राज्य पुलिस बल में सबसे बड़े पुलिस अधिकारियों में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक भास्कर दीवान के अलावा आरक्षक देवसिंह कोर्राम, एसआई बीएस नेताम, एएसआई सुरेन्द ठाकर, प्रधान आरक्षक्त बलसिंह मरकाम, मनाजस्लहक पुरनसिह यादव लघुराम कोराम, दशरथराम नेताम, जार्ज कुजूर, प्यारेलाल सोम कन्हैया लाल कुंजाम, दिलीप कुमार कोसरे, हेमंत कुमार नमवशी शुष्ण सिंह, रतन सिंह, मिलउराम तेला, संतोष बघेल, मोतीराम बघेल, दिनेश दयाण पाखरुद्दीन, सोमारू उर्फ मुरा लब्बू, रामचंद्र, दुक्या राम, खिलायन बिसेन, सुखदेव रामसिंह उर्फ गगरा योगेश मरकाम, जयसिंह ठाकुर, शिवलोचन साहू, विश्वेश्वर चक्रवर्ती. मुरलीधर सिन्हा चंदर सिंह मरावी शिवनारायण, धनीराम उसेण्डी, महेन्द्र सिंह, मंगतूराम पोताई, फिरतूराम बड़दा, पोलिकार्प तिग्गा, सुकमन राम, रामूराम कोर्राम, बिसुन दास कुरें, विजय कुमार यादव, रतिराम सिन्हा, पीलूराम नेताम, अशवनी प्रधान, अब्दुल वाहिद खान, बलीराम पोटाई, यामला धरमैय्या, क्लमेट लकड़ा, संतोष शर्मा, जुगबीर सिंह चुरेन्द्र, ऋषिकेश, संतोष पाहरे, ताराचंद निर्मलकर, चंदन सिंह पोर्ते, राजेन कुमार दीवान, सतीश सिंह यादव, बृजेश सिंह संजय सिंह राय, समारू वट्टी, आनंद राठौर, दानसाय सोरी, सोमबहादुर थापा, महेन्द्र सिंह, मनोज सिंह, पंकज सूर्यवंशी, अथनस बड़ा, अध्वनी राजपूत, पुष्पराज नागवंशी, पूरनसिंह पोताई, भुवनेश्वर मंडावी, संतोष मरकाम, विनोद सिंह कौशिक, मूलचंद कंवर, देवनाथ पुजारी, रायसिंह मरकाम, राजूराम नेताम, जितेन्द्र बघेल, संतू राम वट्टे, केसर सिंह उसेण्डी, जयलाल उइके, पवन कुमार मंडावी, सेवक राम सलाम, देवकरण देहारी, विजय पटेल, सालिकराम मरकाम, संजय लकड़ा, कमलेश कुमार साहू, नितेश एक्का, सत्तेर सिंह करंगा, बिरेंद्र कुमार शोरी, सन्नू कारम व खोटलूराम कोर्राम शामिल है।

अब नक्सल प्रभावित जिलों के आजीविका संवर्धन की प्लानिंग

राज्य में नक्सलवाद से मुक्त हुए क्षेत्रों में तीव्र, स्थायी एवं समावेशी विकास सुनिश्चित करने के उद्देश्य से शुक्रवार को मुख्य सचिव विकास शील की अध्यक्षता में प्रभावित जिलों के आजीविका संवर्धन के लिए राज्यस्तरीय परामर्श कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुख्य सचिव विकास शील ने कहा कि जैसे-जैसे छत्तीसगढ़ नक्सलवाद से मुक्त होता जा रहा है, हमारी जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। जिन क्षेत्रों में अब तक विकास नहीं पहुंच सका, वहां पहुंचकर हमें सतत एवं समावेशी विकास सुनिश्चित करना होगा। एलडब्ल्यूई प्रभावित 8 जिलों के परिवारों की आय 30 हजार रुपए प्रतिमाह तक बढ़ाने का लक्ष्य है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की मंशानुरूप सभी विभागों को समन्वित दृष्टिकोण के साथ आगामी तीन वर्षों की कार्ययोजना तैयार कर कार्य करना होगा। कार्यशाला में अपर मुख्य सचिव ऋचा शर्मा, प्रमुख सचिव पंचायत एवं ग्रामीण विकास निहारिका बारीक, प्रमुख सचिव कृषि श्रीमती शहला निगार, प्रमुख सचिव सोनमणि वोरा, सचिव भीम सिंह सहित संबंधित जिलों के कलेक्टर, जिला पंचायत सीईओ एवं पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, गृह एवं जेल विभाग, आदिम जाति कल्याण विभाग, ग्रामोद्योग विभाग तथा ट्रांसफॉर्म रूरल इंडिया फाउंडेशन के अधिकारी उपस्थित रहे। कार्यशाला में ट्रांसफॉर्म रूरल इंडिया फाउंडेशन के मैनेजिंग डायरेक्टर अनीश कुमार द्वारा इन क्षेत्रों के लिए तैयार समन्वित नीति पर विस्तृत प्रस्तुति दिए।

अफसरों ने दिए सुझाव

स्थानीय संसाधनों के आधार पर आजीविकामूलक गतिविधियों के संचालन एवं संवर्धन पर विशेष जोर दिया जाएगा। कार्यशाला में विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों ने योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए अपने सुझाव प्रस्तुत किए हैं। जिला स्तर के अधिकारियों ने अपने अनुभव साझा करते हुए बेहतर समन्वय की आवश्यकता पर बल दिया। इस दौरान क्लस्टर आधारित एवं ब्लॉक केंद्रित आजीविका मॉडल पर विस्तार से चर्चा की गई। इस मॉडल के अंतर्गत कृषि पशुपालन, वनोपज, मत्स्य पालन, हस्तशिल्प एवं सूक्ष्म उद्यमों को जोड़कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने की योजना है। इसमें विभिन्न विभागों की योजनाओं का एकीकृत क्रियान्वयन एवं बेहतर कन्वर्जेस सुनिश्चित किया जाएगा।

LPG सप्लाई को लेकर प्रशासन ने उद्योगपतियों से की चर्चा

गैस की कमी के कारण प्रभावित हो रहे उद्योग

शहर सत्ता/रायपुर। रायपुर में पश्चिम एशिया संकट के प्रभाव को देखते हुए एलपीजी गैस आपूर्ति की स्थिति पर कलेक्ट्रेट में बैठक हुई, जिसमें उद्योग प्रतिनिधियों ने एलपीजी गैस की आपूर्ति में आ रही समस्याओं को विस्तार से रखा। उन्होंने बताया कि केंद्र सरकार की तरफ से व्यावसायिक इस्तेमाल के लिए 70 प्रतिशत क्षमता के अनुसार गैस उपलब्ध कराई जा रही है, लेकिन औद्योगिक इकाइयों को पर्याप्त आपूर्ति नहीं मिल पा रही है। विशेष रूप से प्लास्टिक कंटेनर निर्माण जैसे उद्योग पूरी तरह एलपीजी पर निर्भर हैं, जिससे कई इकाइयों के बंद होने या कम क्षमता पर चलने की स्थिति बन रही है।

प्रशासन ने आपूर्ति सुनिश्चित करने का दिया आश्वासन

निगम आयुक्त विश्वदीप ने उद्योगों को निर्देश दिए कि वे अपनी वास्तविक गैस आवश्यकता की जानकारी शासन को उपलब्ध कराएं, जिससे स्थिति के अनुसार उचित निर्णय लिया जा सके। उन्होंने भरोसा दिलाया कि उपलब्ध स्टॉक और आवश्यकता के आधार पर गैस आपूर्ति सुनिश्चित की जाएगी।

गैस आपूर्ति की श्रेणियां स्पष्ट

अपर कलेक्टर राठौर ने स्पष्ट किया कि गैस आपूर्ति घरेलू और व्यावसायिक श्रेणियों में की जाती है। औद्योगिक इकाइयों को व्यावसायिक श्रेणी के तहत ही गैस दी जाती है। बैठक में जिला व्यापार-उद्योग केंद्र, खाद्य विभाग और कई औद्योगिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लेकर समाधान पर चर्चा की। इस बैठक में निगम आयुक्त विश्वदीप, अपर कलेक्टर कीर्तिमान सिंह राठौर समेत कई विभागों के अधिकारी और औद्योगिक इकाइयों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

ईसा मसीह की यरूशलेम में विजयी प्रवेश की याद में खजूर रविवार

शहर सत्ता/रायपुर। राजधानी में आज क्रिश्चियन कम्युनिटी ने पाम संडे मनाया। इस अवसर पर चर्चों से रैलियाँ निकली गई। प्रभु यीशु मसीह के जयकारे गूंजे। इस उपलक्ष्य में सेंट पॉल्स कैथेड्रल से मसीही समाज की रैली निकाली गई। रैली की अगुवाई बिशप डॉ सुषमा कुमार, पादरी असीम विक्रम और पुरोहितों ने की। रैली के संयोजक जॉन राजेश पॉल, सचिव रुचि धर्मराज, कोषाध्यक्ष किरण सिंग ने भी नेतृत्व किया। बिशप, पादरी सुबोध कुमार, पादरी विक्रम ने रायपुर और प्रदेशवासियों के लिए प्रार्थना की। तरक्की और भाईचारे के साथ ही खजूर रविवार का महत्व बताया। पादरी सुशील मसीह, पादरी पवन सैमुअल, डिकन मंशीश केजू, भी शामिल हुए। भावे नगर आदर्श युवा सभा और कुछ परिवारों ने फ्रूटी और लस्सी का वितरण किया। रैली में समाज के धर्म गुरुओं समेत सैकड़ों लोग शामिल हुए। कैथोलिक रैलियों की अगुवाई आर्च बिशप विक्टर हैनरी ठाकुर ने की । महिला सभा ई खजूर का वितरण किया। जुलूसों में पास्ट्रेट कोर्ट, पास्ट्रेट कमेटी, युवा सभा, महिला सभा, क्वायर, संडे स्कूल, डॉ रीता चौबे, पल्लवी मिंज, योशियाह अनूदित रंजन, जेनिस दास, डिक्सन बेंजामिन, राजेश लाल, सुदेश दास, प्रवीण जेम्स, सोमरों केजू, मुकेश पॉल, नीरज दास, आर्यन सिंह वाणी, मिंज समीर मर्डिकल, सामर्थ मिंज, अजीत दास, अविनाश दान, विवेक मसीह, एरिक दास, प्रदीप लुईस, अमोन निवेदित रंजन, आमोस पॉल, डॉ नेहा पिल्ले आदि भी प्रमुख रूप से शामिल हुए।

इन जगहों से भी निकली रैली

रैली सेंट पॉल्स कैथेड्रल से आकाशवाणी चौक, ओसीएम चौक, राजीव गांधी चौक, बैजनाथपारा- छोटापारा, कोतवाली चौक, कालीबाड़ी चौक, महिला थाना चौक होते हुए वापस सेंट पॉल्स कैथेड्रल पहुँची। राजा तालाब संडे स्कूल, सेंट जोसफ कैथेड्रल, सेंट मैथ्यूज चर्च, सी एन आई चर्च जोरा सीएनआई चर्च खंडवा आदि से भी जुलूस निकाले गए। सेंट पॉल्स कैथेड्रल में ३२ युवाओं का कन्फ़ॉर्मेशन संस्कार हुआ।

छत्तीसगढ़ में 10 कैदियों की समय से पहले रिहाई

- 14 साल से ज्यादा काटी उम्रकैद की सजा
- रायपुर-दुर्ग और अंबिकापुर के कैदी शामिल

शहर सत्ता/रायपुर। छत्तीसगढ़ सरकार ने आजीवन कारावास की सजा काट रहे बंदियों को बड़ी राहत दी है। राज्य दण्डादेश पुनर्विलोकन बोर्ड की सिफारिश पर 10 बंदियों को समय से पहले रिहाई की मंजूरी दी गई है। इनमें 9 बंदियों को शर्तों के साथ और 1 बंदी को निःशर्त रिहाई दी गई है। ये सभी कल (सोमवार) जेल से रिहा किए जाएंगे, सभी मर्डर के केस में जेल में बंद थे। सभी बंदी 14 साल से ज्यादा समय जेल में काट चुके थे। महानिदेशक जेल हिमांशु गुप्ता (सदस्य सचिव) की ओर से भेजे गए 16 प्रकरणों पर 12 फरवरी 2026 को बोर्ड की बैठक में विचार किया गया। बैठक में संबंधित न्यायालय, जेल अधीक्षक, चिकित्सा अधिकारी, पुलिस अधीक्षक और जिला मजिस्ट्रेट की रिपोर्ट का परीक्षण किया गया।

9 को सशर्त दी गई रिहाई

हिमांशु गुप्ता ने बताया कि इसके बाद रिपोर्ट, व्यवहार, उम्र और जेल में बिताए गए समय को देखते हुए बोर्ड ने 9 मामलों में निर्धारित प्रारूप “स” के तहत शर्तों के अधीन समय से पहले रिहाई की सिफारिश की। जिसे राज्य सरकार ने मंजूरी दे दी। इन बंदियों को 50 हजार रुपए का निजी मुचलका देना होगा। शपथ पत्र देना होगा कि भविष्य में कोई अपराध नहीं करेंगे। शर्तों का उल्लंघन होने पर रिहाई निरस्त कर शेष सजा भुगतनी होगी।

दुर्ग से 8 और अंबिकापुर से एक बंदी होगा रिहा

इन 9 में केन्द्रीय जेल दुर्ग से प्रेमलाल बंजारे, लोचन सतनामी, ओमप्रकाश, पुरानिक, दलित कुमार, दगन उर्फ रामकुमार, कचरूराम लोधी, पीलूराम ये आठ शामिल हैं। वहीं एक बंदी गोपाल कंवर केन्द्रीय जेल अम्बिकापुर से है।

रायपुर के एक बंदी को निःशर्त रिहाई

एक अन्य मामले में उम्र और जेल में बिताए गए लंबे समय को देखते हुए बोर्ड ने निःशर्त रिहाई की सिफारिश की। इस पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करते हुए सरकार ने केन्द्रीय जेल रायपुर के बंदी भागीरथी उर्फ भागी को बिना शर्त रिहा करने की मंजूरी दी है। जेल अधीक्षक योगेश सिंह क्षत्री ने बताया कि, सरकार ने यह निर्णय सुप्रीम कोर्ट और छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट के समय-समय पर दिए गए दिशा-निर्देशों के अनुरूप लिया है। पूरे मामले में अंतिम स्वीकृति मुख्यमंत्री के अनुमोदन के बाद जारी की गई है।

देशभर में घूम-घूमकर डॉलर ठगने वाला मास्टर-माइंड गिरफ्तार

सिंडिकेट बनाकर 9 राज्यों में 22 वारदातों में 3 करोड़ ठगे, UP से पकड़ाया

शहर सत्ता/रायपुर। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर पुलिस ने 3 करोड़ ठगने वाले मास्टर माइंड अमन शर्मा को गिरफ्तार किया है। उसने अपने साथियों के साथ मिलकर 9 राज्यों में विदेशी मुद्रा (डॉलर और पाउंड) के नाम पर 22 वारदातों को अंजाम दिया है। एंटी क्राइम एंड साइबर यूनिट (ACCU) और तेलीबांधा पुलिस ने यह कार्रवाई की है। इससे पहले अमन के भाई मयंक शर्मा को अरेस्ट किया गया था। अंतर्राज्यीय ठग गिरोह के कई साथी फरार है, जिनकी पुलिस तलाश कर रही है। ट्रैवल व्यवसायी हरदीप सिंह होरा की शिकायत के मुताबिक, ठगों ने 'हर्षित अग्रवाल' बनकर उन्हें फोन किया और लंदन-अमेरिका में होटल बुकिंग का झांसा दिया। 2 मार्च 2026 को आरोपियों ने हरदीप को तेलीबांधा के करेंसी टॉवर स्थित एक को-वर्किंग स्पेस में बुलाया। आरोपियों ने व्यापारी को डॉलर के बदले भारतीय पैसे देने का झांसा दिया और 19.47 लाख लेकर फरार हो गए। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने जांच शुरू की और मास्टर माइंड समेत दो आरोपियों को गिरफ्तार कर चुकी है।

9 राज्यों में 22 वारदातें, 3 करोड़ की ठगी

पुलिस की जांच में सामने आया है कि, आरोपी अमन शर्मा और उसका भाई मयंक शर्मा एक संगठित सिंडिकेट चलाते थे। पूछताछ में आरोपी ने कुबूला है कि उन्होंने महाराष्ट्र, दिल्ली, राजस्थान, तेलंगाना, तमिलनाडु, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में वारदातों को अंजाम दिया है।

इस तरह आरोपी करते थे ठगी

पुलिस के मुताबिक, आरोपी फर्जी नाम से ऑफिस या को-वर्किंग स्पेस किराए पर लेते थे। इसके बाद विदेशी मुद्रा के बदले भारतीय रुपए देने का झांसा देकर ठगी करते थे।

लखनऊ से पुलिस ने रेड मारकर पकड़ा

रायपुर पुलिस ने तकनीकी विश्लेषण और मोबाइल लोकेशन के आधार पर आरोपी अमन शर्मा को पश्चिम बंगाल के 24 परगना में ट्रेस किया। जांच में पता चला कि, आरोपी उत्तर प्रदेश के लखनऊ स्थित मॉल एवेन्यू रोड अलाया अपार्टमेंट 304 थर्ड फ्लोर थाना हुसैन गंज में छिपा है। एसीसीयू की टीम ने दबिश दी, तो आरोपी अपने फ्लैट में ताला मारकर अंदर छिपा था।

साप्ताहिक शहर सत्ता

अफीम के बाद गांजा : कलेक्टरों की जांच रिपोर्ट पर उठे सवाल

निगेटिव जांच रिपोर्ट के बाद कोण्डागांव जिले में गांजे की खेती पकड़ी गई

रायपुर। छत्तीसगढ़ के सभी 33 जिलों में अवैध मादक पदार्थ अफीम की खेती को लेकर कलेक्टरों के माध्यम से कराई गई सघन जांच व रिपोर्ट पर अब सवाल उठने लगे हैं। जांच रिपोर्ट में सिर्फ रायगढ़, बलरामपुर व दुर्ग जिले में ही अफीम की खेती की पुष्टि हुई थी। जबकि कोंडागांव सहित प्रदेश के शेष 30 जिला कलेक्टरों ने अपने यहां अफीम या अन्य संदिग्ध खेती नहीं होने की जानकारी दी थी। इस रिपोर्ट के बाद शुक्रवार को ही कोंडागांव के फरसगांव थाना क्षेत्र के ग्राम पारावास में मक्का के खेतों में गांजे के पौधे उगाने का केस सामने आया है।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के निर्देश के बाद राजस्व सचिव व आयुक्त भू-अभिलेख ने बीते 12 मार्च को कलेक्टरों को पत्र जारी कर 15 दिनों के भीतर विस्तृत जांच रिपोर्ट और उनके जिले में अफीम की खेती नहीं होने का प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने कहा था। कलेक्टरों को अपने-अपने जिलों में संभावित क्षेत्रों का सर्वे करने के निर्देश दिए गए थे। सभी जिला कलेक्टरों ने आनन-फानन में हफ्तेभर के भीतर अपने-अपने जिले में राजस्व व पुलिस की संयुक्त टीम द्वारा व्यापक सर्वे कराकर जांच रिपोर्ट शासन को भेजी थी। रिपोर्ट में कहा गया था कि उनके जिले में पुलिस व राजस्व

विभाग के अमले द्वारा सघन जांच की गई है, जिसमें अवैध मादक पदार्थ अफीम या अन्य संदिग्ध फसल होना नहीं पाया गया है।

भौतिक व ड्रोन सर्वे का दावा

सभी कलेक्टरों की रिपोर्ट में दावा किया गया था कि शासन के निर्देश के बाद उनके में व्यापक भौतिक रूप व ड्रोन सर्वे कराया गया। जिले के सभी ग्रामों के कृषि फार्म व भूमि की जांच की गई। इसके बाद विस्तृत जांच रिपोर्ट शासन को भेजी गई। कोण्डागांव सहित 30 जिलों के कलेक्टरों ने रिपोर्ट में कहा था कि उनके जिले में कहीं भी अफीम या अन्य संदिग्ध फसल नहीं होना पाया गया।

केशकाल में गांजे के 686 पौधे जब्त, कीमत 10 लाख

कोंडागांव जिले के केशकाल विकासखंड क्षेत्र में अवैध मादक पदार्थ अफीम/गांजा की खेती किए जाने का खुलासा हुआ है। फरसगांव पुलिस ने छापेमारी करते हुए मक्के की फसल के बीच में अवैध अफीम-गांजे की खेती पकड़ी है। यहां पुलिस टीम द्वारा गांजे के 686 पौधे जब्त किए गए। ग्राम पावारास में अभिराम यादव एवं श्रवन कुमार उइके के खेत में राजस्व विभाग के अधिकारियों की उपस्थिति में पुलिस ने खेतों की तलाशी ली। इसमें आरोपी 28 वर्षीय अभिराम यादव के मक्का के खेत में कुल 237 नग गांजे का पौधा कुल मात्रा 14.96 किग्रा मिली। वहीं आरोपी श्रवन कुमार 38 वर्ष निवासी पावारास के मक्का खेत में कुल 449 नग गांजा का पौधा कुल 6.40 किग्रा मिला। दोनों आरोपियों से कुल 686 नग गांजा का पौधा मात्रा कुल 21 किलो 36 ग्राम मिला। जिसकी अनुमानित कीमत करीबन 10 लाख रूपये है। दोनों आरोपियों को एनडीपीएस की धारा 20 (क) के तहत गिरफ्तार कर वैधानिक कार्रवाई की गई।

धीरेंद्र शास्त्री बोले- हालेलुया बोलने वालों की ठठरी मारी जाएगी

कहा- राह भटके लोगों की घर वापसी कराएंगे

शहर सत्ता/रायपुर। छत्तीसगढ़ में धर्म स्वतंत्रता विधेयक 2026 का मसीही समाज ने विरोध किया है। समाज इस कानून के खिलाफ अलग-अलग तरीकों से अपनी नाराजगी जाहिर कर रहा है। इस बीच कोरबा पहुंचे बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने धर्मांतरण पर बड़ा बयान दिया है। पंडित धीरेंद्र शास्त्री ने कहा कि यहां आसपास हालेलुया वाले भी रहते हैं, उनकी भी ठठरी मारी जाएगी। अब यह खेल नहीं चलेगा। उन्होंने कहा कि जो लोग राह भटक गए हैं, उनकी घर वापसी कराई जाएगी। इसके अलावा उन्होंने खुद को छत्तीसगढ़ का भांचा बताया।

कोरबा के ढपढप में 5 दिवसीय हनुमंत कथा का आयोजन किया गया है। पहले दिन यानी शनिवार को पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने श्रद्धालुओं को कथा सुनाई। बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे। इस दौरान उन्होंने धर्मांतरण पर तीखा प्रहार किया। पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने आसपास के क्षेत्रों में सक्रिय मिशनरियों की ओर इशारा करते हुए कहा कि हालेलुया की ठठरी मारी जाएगी। अब हिंदुओं का धर्मांतरण नहीं होगा। हम कोरबा, रायगढ़, जशपुर और बिलासपुर के हिंदूओं से प्रार्थना करते हैं जिन-जिन लोगों को घर वापसी करनी है, यही सही मौका है। इसके अलावा उन्होंने चुटकी लेते हुए कहा कि अगर कोरबा के लोग कोयला देना बंद कर दें, तो मध्य प्रदेश में बिजली नहीं जलेगी, वहां अंधेरा छा जाएगा।

बोले- मैं छत्तीसगढ़ का भांचा

भावुक अंदाज में धीरेंद्र शास्त्री ने खुद को छत्तीसगढ़ का भांचा बताया। उन्होंने कहा कि यह माता कौशल्या की धरती है, मैं यहां का भांचा हूं, यहां मेरा पूरा अधिकार है।

दोबारा धर्म परिवर्तन कराने वालों को आजीवन कारावास

धर्म स्वतंत्रता विधेयक 2026 के तहत अगर कोई व्यक्ति एक बार धर्म परिवर्तन करवाते हुए पकड़ा जा चुका है और सजा काट चुका है। अगर वह दोबारा किसी व्यक्ति के अवैध धर्मांतरण के मामले में दोषी बनता है, तो उसे आजीवन कारावास के लिए दंडित किया जाएगा, लेकिन न्यायालय कारावास की अवधि को कम कर सकेगा।

कांग्रेस ने थाना घेराव कर मांगा गृहमंत्री का इस्तीफा

शहर सत्ता/रायपुर। रायपुर में बढ़ते अपराधों को लेकर कांग्रेस ने आज टिकरापारा थाने का घेराव कर प्रदर्शन किया। लूट, हत्या, बलात्कार, चोरी और छेड़छाड़ की बढ़ती घटनाओं को लेकर पुलिस प्रशासन को जिम्मेदार ठहराया। इस दौरान गृहमंत्री विजय शर्मा के खिलाफ नारेबाजी करते हुए उनके इस्तीफे की मांग की। शहर कांग्रेस अध्यक्ष श्रीकुमार शंकर मेनन ने टिकरापारा थाना क्षेत्र में हुई युवक अजय अग्रवाल की हत्या का मामला उठाया। उन्होंने आरोप लगाया कि, आरोपी के साथ उसका विवाद लंबे समय से चल रहा था। इसकी जानकारी पुलिस को भी थी, लेकिन समय रहते कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई। उनका कहना था कि, पुलिस की लापरवाही के कारण ही हत्या जैसी घटना हुई, इसलिए जिम्मेदार पुलिसकर्मियों पर विभागीय कार्रवाई की जानी चाहिए। बढ़ते नशे का कारोबार भी अपराध की बड़ी वजह है। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने क्षेत्र में बढ़ते नशे के कारोबार को भी अपराध की बड़ी वजह बताया है। उनका कहना था कि अवैध शराब और ड्रग्स की उपलब्धता के चलते अपराध बढ़ रहे हैं। इसके साथ ही युवती कंचन साहू की गुमशुदगी, चेन स्नेचिंग और रोजाना हो रही मारपीट की घटनाओं पर भी चिंता जताई गई।

रायपुर निगम बजट : विपक्ष का सवाल

पिछले बजट में 219 करोड़ के कामों की घोषणा, लेकिन अमल नहीं

शहर सत्ता/रायपुर। शहर सत्ता/रायपुर। रायपुर नगर निगम का नया बजट पेश होने से पहले ही सियासत तेज हो गई है। नेता प्रतिपक्ष ने पिछले बजट की घोषणाओं को लेकर निगम और महापौर पर निशाना साधते हुए कहा कि, ज्यादातर वादे अब तक जमीन पर नहीं उतर पाए हैं। नेता प्रतिपक्ष का कहना है कि, पिछली बजट घोषणाओं में युवाओं के लिए यूथ हॉस्टल, नालंदा लाइब्रेरी, शहर में जोनवार गार्डन, तालाबों के सौंदर्यीकरण और बड़े स्तर पर अधोसंरचना विकास जैसे कई वादे किए गए थे। इसके अलावा व्यवसायिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए इलेक्ट्रॉनिक मार्केट, कमर्शियल कॉम्प्लेक्स और ट्रेड टावर जैसे प्रोजेक्ट्स की भी घोषणा की गई थी, लेकिन इनमें से अधिकांश योजनाएं कागजों तक ही सीमित हैं।

कई तालाबों की स्थिति बदहाल

नेता प्रतिपक्ष ने यह भी कहा कि, तालाबों के सौंदर्यीकरण और सफाई को लेकर बड़े दावे किए गए थे, लेकिन शहर के कई तालाब आज भी बदहाल स्थिति में हैं। महिलाओं को संपत्ति कर में 25 प्रतिशत छूट देने की घोषणा भी पूरी तरह लागू नहीं हो पाई है, जिससे लोगों में नाराजगी है। उन्होंने आरोप लगाया कि "ट्रिपल इंजन सरकार" के बावजूद शहर में विकास की रफ्तार धीमी है और योजनाएं समय पर पूरी नहीं हो पा रही हैं। उनके मुताबिक, अब जब महापौर दूसरा बजट पेश करने जा रही हैं, तो पहले किए गए वादों का हिसाब देना भी जरूरी है। इधर, नगर निगम का कहना है कि कई योजनाओं पर प्रक्रिया जारी है और चरणबद्ध तरीके से काम किया जा रहा है।

दिव्यांग पथ भी नहीं बनाया गया

उन्होंने खास तौर पर उन बड़े वादों का जिक्र किया, जिनका सीधा असर आम लोगों पर पड़ना था। जैसे 10 करोड़ रुपए की लागत से दिव्यांग पथ बनाने की बात कही गई थी, ताकि शहर में सुगम आवागमन हो सके। इसी तरह चिंगरी नाला में 18 करोड़ रुपए के स्क्रीनिंग प्लांट की घोषणा की गई थी, जिससे गंदा पानी खारुन नदी में जाने से रोका जा सके। लेकिन इन दोनों ही प्रोजेक्ट्स पर अब तक कोई ठोस प्रगति नजर नहीं आ रही।

ड्रंकन ड्राइव मामले में कार्रवाई के बाद रायपुर में रसूखदार ने दी पुलिस को अंजाम भुगतने की धमकी

शहर सत्ता/रायपुर। राजधानी रायपुर में नशे में कार ड्राइव कर रहे एक रसूखदार ने पुलिस को अंजाम भुगतने की धमकी दी है। 28 मार्च की रात पुलिस ने राजू मित्रा को नशे की हालत में कार चलाते हुए पकड़ा, तो राजू ने कहा कि मैं प्रदेश पदाधिकारी हूं, फिर भी आप लोग नहीं समझ रहे। उसका अंजाम यहीं भुगता कर रहूंगा। मामला राजधानी रायपुर के तेलीबांधा थाना क्षेत्र का है। धमकाने का वीडियो भी सामने आया है। राजू ने खुद को राजनीतिक पार्टी का प्रदेश पदाधिकारी बताया। वीडियो में वह कहते दिख रहा है कि छोटा मोटा चालान लेकर छोड़ देते, थोड़ा बहुत शराब पीया हूं। पुलिस ने राजू की गाड़ी जब्त कर ली है। बता दें कि सोशल मीडिया पर राजू की कई बड़े भाजपा नेताओं के साथ फोटो वायरल हुई है और ये वीडियो भी वायरल हो रहा। राजू मित्रा ने सोशल मीडिया पर अपनी प्रोफाइल रखी है। जिसमें उसने खुद को हिंदू जागरण मंच दुर्ग का जिलाध्यक्ष बताया है। इसके साथ ही बीजेपी नेताओं के साथ कई फोटो पोस्ट भी की है। पुलिस ने उसकी कार जब्त कर ली है।

संपादकीय

• सुकांत राजपूत

इच्छा और मृत्यु

22 सेकंड का वीडियो जब से देखा हूं मन बहुत अशांत और व्यथित है। सोशल मीडिया में वायरल ये वीडियो उस हरीश राणा का है जो पिछले 13 सालों से मृत्युशैया पर हैं। 'मर्सी' भारत भर में 24 अप्रैल, 2026 को रिलीज हो गई है।' यह फिल्म ऐसे समय में आई है, जब हाल ही में हरीश राणा को इच्छामृत्यु दी गई है। जिसके बाद एक नई बहस भी छिड़ गई है। हरीश राणा 13 साल से अधिक समय तक कोमा में थे और भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा इच्छामृत्यु की इजाजत पाने वाले पहले व्यक्ति बने। सुप्रीम कोर्ट की ओर से पैसिव यूथेनेशिया (निष्क्रिय इच्छामृत्यु) की अनुमति मिलने के बाद अब हरीश को 'मुक्ति' मिल चुकी है। एम्स में उनके 'सम्मानजनिक विदाई' की अंतिम प्रक्रिया भी हो गई है। इसके तहत अब तक हरीश की सांसों का सहारा बने हुए जीवन रक्षक उपकरणों और साधनों को अलग किया जा रहा है। हरीश ने अपनी जीवन यात्रा को पूर्णता प्रदान करने के लिए उस मंजिल की ओर कदम बढ़ा दिए हैं, जिसे मृत्यु कहते हैं।

हरीश पिछले 13 सालों से कोमा में रहा। जो हरीश अपने असहाय बुजुर्ग माता-पिता की मजबूती का सहारा बन सकता था, खुद इतना असहाय हो गया था कि वो अपने बलबूते शारीरिक हरकत भी नहीं कर पा रहा था। माता-पिता ने अपने इकलौते बेटे की सांसों को सहजने के लिए जो कुछ भी करते बना, किया। खर्चीले इलाज में घर-बार बिक गया, गहने बिक गए, गहरे आर्थिक संकट में घिर गए। सब कुछ लुट गया, लेकिन बची थी तो केवल एक आस कि काश! हरि कोई चमत्कार करें और उनका हरीश स्वस्थ हो जाए।

चमत्कार की आस में माता-पिता ने बेटे की सेवा—सुश्रवा में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी। लेकिन माता-पिता ने भी आखिरकार नियति के आगे हार मान ली। विधाता के न्याय को स्वीकार करते हुए पिता ने अपने जिगर के टुकड़े को असहनीय शारीरिक पीड़ा से मुक्ति दिलाने के लिए 'इच्छामृत्यु' के लिए न्यायालय में गुहार लगाने जैसा कठिन फैसला कर लिया। न्यायालय ने लंबी कानूनी प्रक्रिया और चिकित्सीय सुझावों के आधार पर भारी मन से इच्छामृत्यु की मांग को स्वीकार करते हुए हरीश की इस जहां से रवानगी का मार्ग प्रशस्त कर दिया। लेकिन हरीश की रवानगी का ये दृश्य देखा नहीं गया। एक साध्वी हरीश के माथे पर तिलक लगाने के बाद उससे अनुरोध करती हैं कि, 'सबको माफ करते हुए....सबसे माफी मांगते हुए...अब जाओ।' इस दौरान हरीश के निश्छल चेहरे पर विराजी मासूम मुस्कराहट जैसे कुछ कहना चाहती हो। प्रारब्ध का कैसा क्रूर मजाक और परिस्थितियों की कैसी विडंबना है कि जिसे इच्छामृत्यु दी जा रही है, वो अपनी अंतिम इच्छा भी नहीं बता पा रहा है। अनुत्तरित प्रश्न ये भी कि जिसे इच्छामृत्यु दी जा रही है, क्या उससे उसकी 'इच्छा' पूछी गई थी कि वो 'जीवन' चाहता है या 'मृत्यु'? इस दौरान हरीश के चेहरे पर जैसी शांति, निश्छलभाव और दिव्यता झलक रही थी, उसे महसूस करके दिल भर आता है। इस मार्मिक दृश्य को देख कर लाख कोशिश करने के बाद भी भावनाओं के बांध को बांध सकना मुश्किल है। हरीश के प्रति मानवीय संवेदनाएं उसकी अंतिम यात्रा की मंगलकामना करते हुए अश्रु के रूप में बह निकलती हैं।

हरीश को मिली इच्छामृत्यु की इजाजत के बाद एक बार फिर समाज में इसके कानूनी, नैतिक, मानवीय पहलुओं को लेकर बहस छिड़ गई है। कौन सही है और कौन गलत? क्या सही है और क्या गलत? इसके निर्धारण को लेकर तर्कों, अवधारणाओं और मान्यताओं का अंतहीन सिलसिला है। इस सारी बहस से परे दुखदायी सच्चाई यही है कि हरीश उसकी मौत पर उठने वाले सारे प्रश्नों का उत्तर दिए बिना अपनी अंतिम यात्रा में निकल चुका है। उम्मीद है कि हरीश उस साध्वी के अनुरोध को स्वीकार करते हुए अपनी अंतिम यात्रा में निकला होगा, 'सबको माफ करते हुए....सबसे माफी मांगते हुए...। हरीश तो हरि का हो गया लेकिन उसकी व्यथा-कथा अब फ़िल्मी स्वरुप में 'मर्सी' नाम से दर्शकों को परोसी जाने की तैयारी है।

ऐसे नेता चाहिए जो संवाद के दरवाजे खोल सकें

सुधीर चौधरी

भारत पाकिस्तान की तरह 'दलाली' नहीं करता- विदेश मंत्री एस. जयशंकर का यह सीधा संदेश सिर्फ एक बयान नहीं है, यह भारत की विदेश नीति का स्पष्ट संकेत है। यह बात ऐसे समय कही गई है, जब ईरान-इजराइल युद्ध के बीच पाकिस्तान को अमेरिका और ईरान के बीच संभावित मध्यस्थ के रूप में पेश करने की कोशिशें हो रही हैं। लेकिन सच क्या है?

मध्यस्थता सिर्फ संदेश पहुंचाना नहीं होती। मध्यस्थता का मतलब है समझौते को संभव बनाना और उसे लागू करवाने की क्षमता रखना। यहीं पर पाकिस्तान कमजोर पड़ता है। न उसके पास वह रणनीतिक ताकत है कि वह किसी पक्ष को प्रभावित कर सके और न ही वह विश्वसनीयता कि कोई उस पर भरोसा करे कि वह किसी समझौते को लागू करवा पाएगा।

ईरान के राष्ट्रपति के साथ बातचीत के बाद, प्रधानमंत्री मोदी से आग्रह किया गया है कि वे ब्रिक्स अध्यक्ष के रूप में अपनी भूमिका का इस्तेमाल कर इस युद्ध को रोकने की दिशा में कदम उठाएं। यह सामान्य कूटनीति नहीं है। यह इस बात का संकेत है कि जब दुनिया बंट जाती है, तब कुछ ही देश ऐसे बचते हैं जिनसे हर पक्ष बात करने को तैयार होता है।

आज की वैश्विक स्थिति को देखें तो साफ दिखाई देता है कि इस संघर्ष को कम करने की क्षमता अगर किन्हीं दो नेताओं में है, तो वे हैं नरेंद्र मोदी और व्लादीमीर पुतिन। और इसकी वजह सिर्फ कूटनीति ही नहीं है, ताकत भी है। भारत और रूस छोटे देश नहीं हैं।

एक दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, तो दूसरा महाशक्ति। दोनों के पास बड़ी सेनाएं हैं। दोनों परमाणु शक्ति संपन्न हैं। और सबसे महत्वपूर्ण, मोदी और पुतिन आज दुनिया के सबसे वरिष्ठ और लंबे समय तक शासन करने वाले नेताओं में शामिल हैं। अनुभव, स्थिरता और वैश्विक समझ- इन तीनों का मेल इनमें दिखता है।

भारत आज एक अनोखे संतुलन पर खड़ा है। अमेरिका के साथ मजबूत रणनीतिक साझेदारी है। ट्रम्प मोदी का सम्मान करते हैं। इजराइल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू के साथ निजी दोस्ती, गहरा रक्षा और तकनीकी सहयोग और ईरान के साथ लगातार संवाद भी है।

खाड़ी देशों के साथ भारत के रिश्ते भी पिछले एक दशक में नई ऊंचाई पर पहुंचे हैं। यूएई से लेकर सऊदी अरब तक, ऊर्जा, निवेश, सुरक्षा और प्रवासियों के कारण भारत के प्रति भरोसा मजबूत हुआ है। करीब 1 करोड़ भारतीय खाड़ी देशों में रहते हैं। यही संख्या भारत को एक मूकदर्शक नहीं, बल्कि सीधा हितधारक बनाती है।

मोदी की कूटनीति की सबसे बड़ी खासियत है, शांति से काम करना, लेकिन असर के साथ। वे बिना शोर के संवाद बनाए रखते हैं और हर पक्ष से बात करने की क्षमता रखते हैं। अब बात पुतिन की। उनके पास दो बड़े फायदे हैं। पहला, वे ईरान के भरोसेमंद साझेदार हैं।

रूस और ईरान के बीच गहरे रणनीतिक संबंध हैं, जो पुतिन को तेहरान तक सीधी पहुंच देते हैं। दूसरे, उनके पास ट्रम्प के साथ संवाद का सीधा चैनल भी है। और इस संघर्ष को रोकने के लिए वॉशिंगटन की भूमिका निर्णायक है।

सीधे शब्दों में, पुतिन ईरान से प्रभाव के साथ बात कर सकते हैं और अमेरिका से पहुंच के साथ। यहीं से तस्वीर साफ होती है। पाकिस्तान मध्यस्थ बनना चाहता है, लेकिन उसके पास न ताकत है, न भरोसा। मोदी के पास भरोसा है- हर पक्ष के साथ। पुतिन के पास प्रभाव है- शक्ति केंद्रों के भीतर। ये दो अलग ताकतें हैं, लेकिन एक साझा संभावना है- शांति।

लेकिन सबसे बड़ा सवाल अभी भी बाकी है कि क्या भारत को इस भूमिका में आगे आना चाहिए? क्योंकि पश्चिम एशिया सिर्फ कूटनीति से नहीं चलता। यह इतिहास, पहचान, सत्ता और अविश्वास का जटिल मिश्रण है। फिर भी, संकेत साफ हैं। ईरान भारत की ओर देख रहा है। खाड़ी देश भारत पर भरोसा करते हैं। और दुनिया को ऐसे नेताओं की जरूरत है, जो संवाद के दरवाजे खोल सकें।

इस तलाश में नरेंद्र मोदी और व्लादीमीर पुतिन सिर्फ विकल्प नहीं हैं। शायद यही वह जोड़ी है, जो इस युद्ध को रोकने की दिशा में निर्णायक भूमिका निभा सकती है और इस युद्ध की वजह से पूरी दुनिया में आने वाली आर्थिक मंदी को रोक सकती है।

भारत और रूस कोई छोटे देश नहीं हैं। दोनों के पास बड़ी सेनाएं हैं। दोनों परमाणु शक्ति संपन्न हैं। मोदी और पुतिन- ये दोनों ही आज दुनिया के सबसे वरिष्ठ और लंबे समय तक शासन करने वाले नेताओं में भी शामिल हैं।

संतुलित, मीठे और अर्थपूर्ण शब्द भी पूजा है

विवेकानंद कहते थे आपके शब्द आपके व्यक्तित्व के प्रतिनिधि हैं। वैसे तो आदमी आजकल ये कला सीख गया है कि बनाकर बात कैसे करना। तो भीतर कुछ और चल रहा है और बाहर बहुत मीठे शब्द बोले जा रहे हैं। लेकिन लंबे समय ऐसा चलता नहीं है। तो अध्यात्म कहता है- जो बोलो, दिल से बोलो। हृदय स्वच्छ रहता है तो वाणी भी पवित्र होगी।

शब्दों में गजब की ताकत है। आप भीतर से जैसे हैं, वैसे ही शब्द बोल रहे हैं तो आपका आत्मबल और बढ़ जाएगा। आप शांत महसूस करेंगे। धीरे-धीरे नई पीढ़ी की शब्दावली और भ्रमित होने वाली है। विकृति की ओर तो चल ही रही है। सोशल मीडिया पर जो संदेश आदान-प्रदान होते हैं, उन्हें केवल आंखों से नहीं पढ़ा जा रहा, वे कानों से भी भीतर उतर रहे हैं।

चूंकि उनमें सत्य नहीं होता, दुष्प्रचार होता है, लोगों को भ्रम में डालने के लिए आकर्षण होता है, इसलिए कम से कम अपने भीतर के शब्दों पर काम करिए और संतुलित, मीठे, अर्थपूर्ण शब्द ही बोलिए। ये भी अपने में एक पूजा और मेडिटेशन है।

साप्ताहिक शहर सत्ता

'नो किंग्स' आंदोलन से हिला अमेरिका

ईरान जंग के बीच भड़की जनता, क्या खतरे में है ट्रंप की कुर्सी?

अमेरिका इस समय दो बड़े मोर्चों पर जूझ रहा है. एक ओर पश्चिम एशिया में ईरान के खिलाफ जारी जंग में हजारों लोगों की जान जा चुकी है, वहीं दूसरी ओर देश के भीतर राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की नीतियों के खिलाफ जनता का गुस्सा सड़कों पर फूट पड़ा है.अमेरिका के सभी 50 राज्यों में शनिवार को "नो किंग्स" यानी "कोई राजा नहीं" के बैनर तले हजारों रैलियां आयोजित की गईं. इस आंदोलन की गूंज सिर्फ अमेरिका तक सीमित नहीं रही, बल्कि यूरोप, लैटिन अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में भी लोग सड़कों पर उतरकर विरोध करते नजर आए.

प्रदर्शन का बड़ा पैमाना

यह "नो किंग्स" आंदोलन की तीसरी बड़ी रैली थी. आयोजकों के मुताबिक जून में करीब 50 लाख और अक्टूबर में 70 लाख लोग सड़कों पर उतरे थे, जबकि इस बार लगभग 90 लाख लोगों के शामिल होने का अनुमान जताया गया. पूरे देश में 3,100 से ज्यादा कार्यक्रम आयोजित किए गए, जो अक्टूबर की तुलना में 500 अधिक हैं. खास बात यह रही कि इन रैलियों में से दो-तिहाई छोटे कस्बों और ग्रामीण इलाकों में आयोजित हुईं, जिससे साफ है कि आंदोलन अब हर वर्ग तक पहुंच चुका है.

मिनेसोटा बना आंदोलन का केंद्र

इस बार की सबसे बड़ी रैली सेंट पॉल में हुई, जिसे राष्ट्रीय मुख्य कार्यक्रम घोषित किया गया था. यहां मशहूर रॉक गायक ब्रूस स्प्रिंगस्टीन ने "स्ट्रीट्स ऑफ मिनियापोलिस" नाम का नया गीत प्रस्तुत किया. यह गीत रेनी गुड और एलेक्स प्रेटी की याद में लिखा गया था, जो अमेरिकी इमिग्रेशन एजेंटों की गोलीबारी में मारे गए थे. स्प्रिंगस्टीन ने कहा कि मिनेसोटा के लोगों की हिम्मत और एकजुटता पूरे देश के लिए उम्मीद की किरण है और ऐसे हमले अमेरिकी शहरों को नहीं झुका सकते.

दिग्गज हस्तियों की मौजूदगी

इस कार्यक्रम में कई बड़े नाम शामिल हुए, जिनमें अभिनेता रॉबर्ट डी नीरो, गायिका जोन बेज, अभिनेत्री जेन फोंडा और सीनेटर बर्नी सैंडर्स शामिल रहे. कैपिटल की सीढ़ियों पर एक बड़ा बैनर लगाया गया, जिस पर लिखा था, "हमारे पास सीटियां थीं, उनके पास बंदूकें. क्रांति मिनियापोलिस से शुरू होती है." प्रदर्शनकारियों की नाराजगी कई मुद्दों पर सामने आई. सबसे बड़ा मुद्दा ट्रंप प्रशासन का आक्रामक इमिग्रेशन अभियान रहा,।

ईरान में छिड़ी 'भीतरी जंग', राष्ट्रपति पेजेश्कियान और IRGC चीफ के बीच मतभेद गहराए, तख्तापलट के संकेत?

ईरान के राष्ट्रपति पेजेश्कियान और IRGC चीफ अहमद वाहिदी के बीच युद्ध को खत्म करने को लेकर मतभेद की खबर आई सामने. पेजेश्कियान को नरमपंथी माना जाता है, जबकि IRGC चीफ कट्टरपंथी विचारधारा से ताल्लुक रखते हैं और अमेरिका-इजरायल को जानी दुश्मन मानते हैं. बता दें कि यह मतभेद इस बात को लेकर हैं कि चल रहे युद्ध और उसके असर को कैसे संभाला जाए, खासकर जब इसका असर आम लोगों और देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ रहा है.ईरान इंटरनेशनल के अनुसार, राष्ट्रपति पेजेश्कियन ने IRGC की रणनीति पर सवाल उठाए हैं. उनका कहना है कि लगातार तनाव बढ़ाने और पड़ोसी देशों पर हमले करने से देश की आर्थिक स्थिति और खराब हो रही है. बताया जा रहा है कि उन्होंने चेतावनी दी है कि अगर जल्द ही युद्ध नहीं रुका तो अगले तीन हफ्तों से एक महीने के अंदर ईरान की अर्थव्यवस्था पूरी तरह गिर सकती है. 7 मार्च को पेजेश्कियन ने एक वीडियो मैसेज में पड़ोसी देशों पर हो रहे हमलों के लिए माफी भी मांगी थी और सेना को ऐसे हमले रोकने का निर्देश दिया था, लेकिन उनके इस बयान के बाद भी हमले जारी रहे. राष्ट्रपति ने यह भी मांग की है कि प्रशासन से जुड़े फैसलों की पूरी ताकत फिर से सरकार को दी जाए, ताकि हालात को बेहतर तरीके से संभाला जा सके।

ईरान युद्ध के बीच भारत ने श्रीलंका को दिया 38000 मीट्रिक टन पेट्रोलियम

नई दिल्ली। अमेरिका और इजरायल के खिलाफ ईरान की जंग और होर्मुज जलडमरूमध्य के बंद होने से उत्पन्न ऊर्जा संकट के बीच भारत ने श्रीलंका को बड़ी राहत दी है. भारत ने आपातकालीन मदद के रूप में कुल 38,000 मीट्रिक टन पेट्रोलियम उत्पाद श्रीलंका को सप्लाई किए, जिसमें 20,000 मीट्रिक टन डीजल और 18,000 मीट्रिक टन पेट्रोल शामिल हैं.

श्रीलंका ने इस मदद के बाद खुले तौर पर भारत का आभार जताया. कोलंबो स्थित भारतीय उच्चायोग के अनुसार, यह सप्लाई ऐसे समय में की गई जब ईरान युद्ध के कारण वैश्विक सप्लाई चेन बाधित हो चुकी थी और श्रीलंका को गंभीर ईंधन संकट का सामना करना पड़ रहा था. श्रीलंका के प्रमुख विपक्षी नेता सजिथ प्रेमदासा ने भी भारत का धन्यवाद करते हुए कहा कि असली रिश्तों की पहचान संकट के समय होती है, और भारत ने इस कठिन घड़ी में साथ देकर इसे साबित किया है.श्रीलंका ने जनवरी में चीन की सरकारी ऊर्जा कंपनी सिनोपेक के साथ हंबनटोटा बंदरगाह के पास 200,000 बैरल क्षमता वाली तेल रिफाइनरी बनाने के लिए 3.7 अरब डॉलर का समझौता किया था. लेकिन होर्मुज स्ट्रेट बंद होने से उत्पन्न संकट के समय चीन ने अब तक कोई मदद नहीं दी. प्रेमदासा के इस बयान को चीन की परोक्ष आलोचना के रूप में देखा जा रहा है.

पश्चिम एशिया में युद्ध के कारण कई अंतरराष्ट्रीय सप्लायर्स ने 'फोर्स मेज्योर' का हवाला देते हुए ईंधन की आपूर्ति करने से मना कर दिया. जहाजों की कमी और समुद्री रास्तों में बाधा के कारण श्रीलंका गंभीर संकट में फंस गया. ऐसे में भारत ने इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन (IOC) के जरिए तुरंत आपातकालीन सप्लाई उपलब्ध कराई. इससे पहले 24 मार्च को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुर कुमार डिसानायके के बीच फोन पर बातचीत हुई, जिसमें पश्चिम एशिया के हालात, सप्लाई चेन में रुकावट और ऊर्जा सहयोग पर चर्चा हुई।

क्या ईरान में होगा ग्राउंड ऑपरेशन? अमेरिका ने भेजे 3500 सैनिक

नई दिल्ली। ईरान के साथ चल रहे युद्ध को शुक्रवार को एक महीना पूरा होने के बीच अमेरिका ने मध्य पूर्व में अपनी सैन्य मौजूदगी और बढ़ा दी है. अमेरिकी सेंट्रल कमांड (CENTCOM) के मुताबिक, USS त्रिपोली पर सवार करीब 3,500 मरीन और नाविक क्षेत्र में पहुंच गए हैं. यह तैनाती ऐसे समय में हुई है जब यह अटकलें तेज हैं कि क्या अमेरिका ईरान में जमीनी सैनिक भेजने पर विचार कर सकता है.

पहले से तैनात हैं 50,000 अमेरिकी सैनिक

नई तैनाती के साथ अब मध्य पूर्व में करीब 50,000 अमेरिकी सैनिक मौजूद हैं. इससे पहले भी अमेरिका इस क्षेत्र में अपनी सैन्य ताकत बढ़ा चुका था, जिससे यह पिछले 20 वर्षों में सबसे बड़ा सैन्य जमावड़ा बन गया है.

27 मार्च को पहुंचा USS ट्रिपोली

CENTCOM ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म X पर जानकारी दी कि USS ट्रिपोली 27 मार्च को मध्य पूर्व पहुंचा. बयान में कहा गया कि 'यूएस सेंट्रल कमांड के क्षेत्र में USS ट्रिपोली पर तैनात नाविक और मरीन पहुंच चुके हैं.' USS ट्रिपोली पर ट्रांसपोर्ट और हमले के लिए इस्तेमाल होने वाले कई तरह के विमान और वॉर डिवाइस मौजूद हैं।

दुनिया की सबसे ताकतवर एयरफोर्स है अमेरिका के पास

भारत के पास है चौथी सबसे घातक एयरफोर्स

दुनियाभर में बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव, जैसे यूक्रेन संकट और मध्य पूर्व में हालात, के बीच सैन्य खर्च लगातार रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच रहा है.

स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट के अनुसार, साल 2023 में वैश्विक सैन्य खर्च 2.44 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच गया, जो पिछले साल के मुकाबले 6.8% ज्यादा है. इसके चलते दुनिया भर के देश अपनी हवाई ताकत को तेजी से मजबूत कर रहे हैं.

क्यों अहम है एयर पावर

हवाई शक्ति लंबे समय से वैश्विक ताकत का अहम पैमाना रही है. 20वीं सदी की शुरुआत से ही युद्धों में एयरफोर्स निर्णायक भूमिका निभाती आई है और आज भी यह किसी भी देश की सैन्य क्षमता का प्रमुख हिस्सा मानी जाती है.

लगातार बढ़ रही है हवाई ताकत

दुनिया के कई देश अपनी एयरफोर्स को आधुनिक बना रहे हैं, नए लड़ाकू विमान शामिल कर रहे हैं और तकनीकी क्षमताओं को बढ़ा रहे हैं, ताकि रणनीतिक बढ़त हासिल की जा सके.

अमेरिका सबसे ताकतवर

अमेरिका दुनिया की सबसे ताकतवर एयरफोर्स रखता है. उसकी हवाई ताकत इतनी ज्यादा है कि वह अकेले ही रूस, चीन, भारत, दक्षिण कोरिया और जापान की संयुक्त ताकत से भी आगे है. इसका एक बड़ा कारण वैश्विक सैन्य खर्च में अमेरिका की करीब 40% हिस्सेदारी है. रूस दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी एयरफोर्स रखता है, जिसकी क्षमता अमेरिका के मुकाबले लगभग एक-तिहाई है. वहीं चीन तीसरे स्थान पर है और वह तेजी से अपनी हवाई क्षमता को आधुनिक तकनीक के जरिए बढ़ा रहा है.

टॉप-10 देशों की सूची

Global Firepower 2025 के अनुसार सबसे ताकतवर एयरफोर्स वाले देशों की सूची इस प्रकार है:

अमेरिका	-	13,043 विमान
रूस	-	4,292 विमान
चीन	-	3,309 विमान
भारत	-	2,229 विमान
द. कोरिया	-	1,592 विमान
जापान	-	1,443 विमान
पाकिस्तान	-	1,399 विमान
मिस्र	-	1,093 विमान
तुर्की	-	1,083 विमान
फ्रांस	-	976 विमान

एक मिनट में 700 राउंड फायरिंग, भारतीय सेना को मिली 2000 स्वदेशी 'प्रहार'

नई दिल्ली। देश की सुरक्षा में तैनात भारतीय सेना अपने सुरक्षा चक्र को और ज्यादा मजबूत करने के दिशा में आगे बढ़ते हुए लगातार अपने हथियारों को आधुनिक बना रही है. इसी क्रम में मेक इन इंडिया इनिशिएटिव के तहत स्वदेश निर्मित प्रहार लाइट मशीन गन (LMG) की पहली खेप भारतीय सेना को सौंप दी गई है. अदाणी डिफेंस एंड एयरोस्पेस ने शनिवार (28 मार्च, 2026) को 2,000 प्रहार LMG की पहली खेप भारतीय सेना को सौंप दी है. इस मौके पर रक्षा मंत्रालय और कंपनी के कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे.यह डिलीवरी ग्वालियर स्थित अदाणी स्मॉल आर्म्स कॉम्प्लेक्स से रवाना की गई. 7.62x51 मिमि की प्रहार LMG भारतीय सेना में पुरानी 5.56x45 मिमि इंसास लाइट मशीन गन की जगह लेगी. यह आधुनिक प्रहार LMG एक मिनट में 700 राउंड की ताबड़तोड़ फायरिंग कर सकने में सक्षम है, जो भारतीय सेना की ताकत में और इजाफा करेगी. इसकी मारक क्षमता 1,000 मीटर है यानी सेना एक किलोमीटर दूर बैठे दुश्मन पर भी सटीक निशाना लगा सकती है.हालांकि, इस समय चीन से लगने वाली वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) और पाकिस्तान से लगने वाली नियंत्रण रेखा (LOC) पर स्थिति अपेक्षाकृत शांत है।

आईपीएल 2026 के पहले मैच में विराट कोहली ने रचा इतिहास

नई दिल्ली। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु और सनराइजर्स हैदराबाद के मैच से शनिवार को आईपीएल 2026 का आगाज हुआ. आईपीएल 2026 के पहले मैच में सभी की नजरें विराट कोहली पर थीं, किंग कोहली ने भी किसी को निराश नहीं किया और नाबाद 69 रनों की पारी खेल आरसीबी को शानदार जीत दिलाई. इसके साथ ही विराट कोहली ने एक बड़ा रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया.

सनराइजर्स हैदराबाद से मिले 202 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए विराट कोहली ने सिर्फ 38 गेंद में नाबाद 69 रनों की मैच विनिंग पारी खेली. इस दौरान उनके बल्ले से 5 चौके और 5 छक्के निकले. किंग कोहली आईपीएल में लक्ष्य का पीछा करते हुए 4 हजार रन पूरे करने वाले पहले बल्लेबाज बन गए हैं. आईपीएल में इससे पहले कोई भी बल्लेबाज ऐसा नहीं कर सका. सनराइजर्स हैदराबाद से मिले 202 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी आरसीबी टीम की शुरुआत अच्छी नहीं रही. विराट कोहली के सलामी जोड़ीदार फिल साल्ट महज 8 रन बनाकर आउट हुए. हालांकि, इसके बाद किंग कोहली ने देवदत्त पडिक्कल के साथ मिलकर मोर्चा संभाला. दोनों ने दूसरे विकेट के लिए शतकीय साझेदारी निभाई. विराट बेहतरीन लय में दिखाई दिए.

आरसीबी ने जीता मैच

सनराइजर्स हैदराबाद ने टॉस हारकर पहले खेलने के बाद 20 ओवर में 201 रनों का स्कोर खड़ा किया. हैदराबाद के लिए कप्तान ईशान किशन ने 38 गेंद में 80 रनों की धुआंधार पारी खेली. युवा अनिकेत वर्मा ने सिर्फ 18 गेंद में 43 रन बना दिए. हालांकि, चिन्नास्वामी जैसे छोटे ग्राउंड पर यह स्कोर मैच विनिंग नहीं था. आरसीबी ने सिर्फ 9 के स्कोर पर पहला विकेट गंवा दिया. फिल साल्ट आठ रन बनाकर आउट हुए. हालांकि, देवदत्त पडिक्कल और विराट कोहली ने टीम पर प्रेशर नहीं आने दिया. पडिक्कल ने सिर्फ 26 गेंद में 61 रनों की शानदार पारी खेली, वहीं किंग कोहली आरसीबी को जीत दिलाकर वापस लौटे. आरसीबी ने 202 रनों के लक्ष्य को सिर्फ 15.4 ओवर में ही हासिल कर लिया.

अप्रैल के अंत तक हो सकती है एमएस धोनी की वापसी

एमएस धोनी के फैंस के लिए आईपीएल 2026 की शुरुआत अच्छी नहीं रहेगी, क्योंकि इंजरी के चलते माही 19वें सीजन के शुरुआती कुछ मैचों में नजर नहीं आएंगे. लेकिन अब यह सामने आ गया है कि धोनी शुरुआत के कितने मैचों में चेन्नई सुपर किंग्स की जर्सी में नहीं दिखेंगे. इसके अलावा यह भी जानेंगे किस मैच में किस तारीख को धोनी की वापसी हो सकती है.

कितने मैच मिस कर सकते हैं धोनी

टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट में सीएसके के एक सोर्स के हवाले से कहा गया कि धोनी की वापसी अप्रैल के अंत में हो सकती है. लिहाजा धोनी कम से कम 6 मैच मिस कर सकते हैं. बीते शनिवार (28 मार्च) को चेन्नई ने एक बयान जारी करते हुए कहा था कि धोनी फिलहाल पिंडली की चोट से उबरने के लिए रिहैबिलिटेशन से गुजर रहे हैं. लिहाजा वह टूर्नामेंट के शुरुआती 2 हफ्तों तक बाहर रह सकते हैं. बता दें कि चेन्नई सुपर किंग्स 19वें सीजन में अपने अभियान का आगाज 30 मार्च, सोमवार को राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ मुकाबला खेलकर करेगी. यह मैच गुवाहटी के बारसपारा स्टेडियम में खेला जाएगा.

सीएसके छठा लीग मैच 18 अप्रैल को सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ हैदराबाद में खेलेगी. अगर धोनी इस मैच तक बाहर रहते हैं और सातवें मैच में उनकी टीम में वापसी होती है, तो वह 23 अप्रैल को चेन्नई के लिए मुंबई इंडियंस के खिलाफ मैच खेलते हुए दिख सकते हैं. हालांकि धोनी की वापसी की तारीख को लेकर अब तक आधिकारिक अपडेट नहीं आया है.

एमएस धोनी का आईपीएल करियर

एमएस धोनी ने अब तक अपने आईपीएल करियर में 278 मुकाबले खेल लिए हैं. इन मैचों की 242 पारियों में बैटिंग करते हुए माही ने 38.30 की औसत और 137.45 के स्ट्राइक रेट से 5439 रन बना लिए हैं. इस दौरान उनके बल्ले से 24 अर्धशतक निकले हैं, जिसमें हाई स्कोर 84* रनों का रहा है. पिछले सीजन माही ने 13 पारियों में 196 रन बनाए थे.

आईपीएल 2026 शेड्यूल

मैच	तारीख	मुकाबला	वेन्यू
1	28 मार्च	रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु vs सनराइजर्स हैदराबाद	बेंगलुरु
2	29 मार्च	मुंबई इंडियंस vs कोलकाता नाइट राइडर्स	मुंबई
3	30 मार्च	राजस्थान रॉयल्स vs चेन्नई सुपर किंग्स	गुवाहाटी
4	31 मार्च	पंजाब किंग्स vs गुजरात टाइटन्स	न्यू चंडीगढ़
5	01 अप्रैल	लखनऊ सुपर जायंट्स vs दिल्ली कैपिटल्स	लखनऊ
6	02 अप्रैल	कोलकाता नाइटराइडर्स vs सनराइजर्स हैदराबाद	कोलकाता
7	03 अप्रैल	चेन्नई सुपर किंग्स vs पंजाब किंग्स	चेन्नई
8	04 अप्रैल	दिल्ली कैपिटल्स vs मुंबई इंडियंस	दिल्ली
9	04 अप्रैल	गुजरात टाइटन्स vs राजस्थान रॉयल्स	अहमदाबाद
10	05 अप्रैल	सनराइजर्स हैदराबाद vs लखनऊ सुपर जायंट्स	हैदराबाद
11	05 अप्रैल	रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु vs चेन्नई सुपर किंग्स	बेंगलुरु
12	06 अप्रैल	कोलकाता नाइट राइडर्स vs पंजाब किंग्स	कोलकाता
13	07 अप्रैल	राजस्थान रॉयल्स vs मुंबई इंडियंस	गुवाहाटी
14	08 अप्रैल	दिल्ली कैपिटल्स vs गुजरात टाइटन्स	दिल्ली
15	09 अप्रैल	कोलकाता नाइट राइडर्स vs लखनऊ	कोलकाता
16	10 अप्रैल	राजस्थान रॉयल्स vs रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु	गुवाहाटी
17	11 अप्रैल	पंजाब किंग्स vs सनराइजर्स हैदराबाद	न्यू चंडीगढ़
18	11 अप्रैल	चेन्नई सुपर किंग्स vs दिल्ली कैपिटल्स	चेन्नई
19	12 अप्रैल	लखनऊ सुपर जायंट्स vs गुजरात टाइटन्स	लखनऊ
20	12 अप्रैल	मुंबई इंडियंस vs रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु	मुंबई
21	13 अप्रैल	सनराइजर्स हैदराबाद vs राजस्थान रॉयल्स	हैदराबाद
22	14 अप्रैल	चेन्नई सुपर किंग्स vs कोलकाता नाइट राइडर्स	चेन्नई
23	15 अप्रैल	रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु vs लखनऊ सुपर जायंट्स	बेंगलुरु
24	16 अप्रैल	मुंबई इंडियंस vs पंजाब किंग्स	मुंबई
25	17 अप्रैल	गुजरात टाइटन्स vs कोलकाता नाइट राइडर्स	अहमदाबाद
26	18 अप्रैल	रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु vs दिल्ली कैपिटल्स	बेंगलुरु
27	18 अप्रैल	सनराइजर्स हैदराबाद vs चेन्नई सुपर किंग्स	हैदराबाद
28	19 अप्रैल	कोलकाता नाइट राइडर्स vs राजस्थान रॉयल्स	कोलकाता
29	19 अप्रैल	पंजाब किंग्स vs लखनऊ सुपर जायंट्स	न्यू चंडीगढ़
30	20 अप्रैल	गुजरात टाइटन्स vs मुंबई इंडियंस	अहमदाबाद
31	21 अप्रैल	सनराइजर्स हैदराबाद vs दिल्ली कैपिटल्स	हैदराबाद
32	22 अप्रैल	लखनऊ सुपर जायंट्स vs राजस्थान रॉयल्स	लखनऊ
33	23 अप्रैल	मुंबई इंडियंस vs चेन्नई सुपर किंग्स	मुंबई
34	24 अप्रैल	रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु vs गुजरात टाइटन्स	बेंगलुरु
35	25 अप्रैल	दिल्ली कैपिटल्स vs पंजाब किंग्स	दिल्ली
36	25 अप्रैल	राजस्थान रॉयल्स vs सनराइजर्स हैदराबाद	जयपुर
37	26 अप्रैल	गुजरात टाइटन्स vs चेन्नई सुपर किंग्स	अहमदाबाद
38	26 अप्रैल	लखनऊ vs कोलकाता नाइट राइडर्स	लखनऊ
39	27 अप्रैल	दिल्ली कैपिटल्स vs रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु	दिल्ली
40	28 अप्रैल	पंजाब किंग्स vs राजस्थान रॉयल्स	न्यू चंडीगढ़
41	29 अप्रैल	मुंबई इंडियंस vs सनराइजर्स हैदराबाद	मुंबई
42	30 अप्रैल	गुजरात टाइटन्स vs रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु	अहमदाबाद
43	01 मई	राजस्थान रॉयल्स vs दिल्ली कैपिटल्स	जयपुर
44	02 मई	चेन्नई सुपर किंग्स vs मुंबई इंडियंस	चेन्नई
45	03 मई	हैदराबाद vs कोलकाता नाइट राइडर्स	हैदराबाद
46	03 मई	गुजरात टाइटन्स vs पंजाब किंग्स	अहमदाबाद
47	04 मई	मुंबई इंडियंस vs लखनऊ सुपर जायंट्स	मुंबई
48	05 मई	दिल्ली कैपिटल्स vs चेन्नई सुपर किंग्स	दिल्ली
49	06 मई	सनराइजर्स हैदराबाद vs पंजाब किंग्स	हैदराबाद
50	07 मई	लखनऊ सुपर जायंट्स vs रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु	लखनऊ
51	08 मई	दिल्ली कैपिटल्स vs कोलकाता नाइट राइडर्स	दिल्ली
52	09 मई	राजस्थान रॉयल्स vs गुजरात टाइटन्स	जयपुर
53	10 मई	चेन्नई सुपर किंग्स vs लखनऊ सुपर जायंट्स	चेन्नई
54	10 मई	रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु vs मुंबई इंडियंस	रायपुर
55	11 मई	पंजाब किंग्स vs दिल्ली कैपिटल्स	धर्मशाला
56	12 मई	गुजरात टाइटन्स vs सनराइजर्स हैदराबाद	अहमदाबाद
57	13 मई	बेंगलुरु vs कोलकाता नाइट राइडर्स	रायपुर
58	14 मई	पंजाब किंग्स vs मुंबई इंडियंस	धर्मशाला
59	15 मई	लखनऊ सुपर जायंट्स vs चेन्नई सुपर किंग्स	लखनऊ
60	16 मई	कोलकाता नाइट राइडर्स vs गुजरात टाइटन्स	कोलकाता
61	17 मई	पंजाब किंग्स vs रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु	धर्मशाला
62	17 मई	दिल्ली कैपिटल्स vs राजस्थान रॉयल्स	दिल्ली
63	18 मई	चेन्नई सुपर किंग्स vs सनराइजर्स हैदराबाद	चेन्नई
64	19 मई	राजस्थान रॉयल्स vs लखनऊ सुपर जायंट्स	जयपुर
65	20 मई	कोलकाता नाइट राइडर्स vs मुंबई इंडियंस	कोलकाता
66	21 मई	चेन्नई सुपर किंग्स vs गुजरात टाइटन्स	चेन्नई
67	22 मई	सनराइजर्स हैदराबाद vs रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु	हैदराबाद
68	23 मई	लखनऊ सुपर जायंट्स vs पंजाब किंग्स	लखनऊ
69	24 मई	मुंबई इंडियंस vs राजस्थान रॉयल्स	मुंबई
70	24 मई 2026	कोलकाता नाइट राइडर्स vs दिल्ली कैपिटल्स	कोलकाता

साप्ताहिक शहर सत्ता

आवश्यक वस्तुओं की कालाबाजारी-जमाखोरी पर सख्ती

- **मुख्यमंत्री ने की समीक्षाः कमिश्नर, आईजी व कलेक्टरों को दिए निर्देश**

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने पश्चिम एशिया में उत्पन्न परिस्थितियों के मद्देनजर शनिवार को राजधानी रायपुर स्थित अपने निवास कार्यालय में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से प्रदेश के सभी कमिश्नर, आईजी, कलेक्टर और एसपी के साथ उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक की। बैठक में पेट्रोलियम उत्पादों, एलपीजी गैस, उर्वरकों और अन्य आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता व आपूर्ति व्यवस्था की व्यापक समीक्षा करते हुए अधिकारियों को दिशा-निर्देश दिए गए।

मुख्यमंत्री ने आवश्यक वस्तुओं की कालाबाजारी या जमाखोरी करने वालों पर कड़ी कार्रवाई के निर्देश दिए। सभी पेट्रोल पंपों और गैस एजेंसियों के भंडारण व आपूर्ति की नियमित मॉनिटरिंग करने को भी कहा। सीएम श्री साय ने स्पष्ट किया, वर्तमान में कोविड जैसी स्थिति नहीं है, लेकिन सतर्कता जरूरी है।

प्रदेश में पेट्रोलियम पदार्थों, गैस सिलेंडरों और उर्वरकों की भी कोई कमी है, इसलिए नागरिक किसी प्रकार की अफवाहों पर ध्यान न दें। राज्य स्तरीय कंट्रोल रूम बनाकर उच्च स्तरीय समिति द्वारा लगातार निगरानी की जा रही है। उन्होंने निर्देश दिए कि प्रत्येक जिले में कंट्रोल रूम स्थापित करें। प्रभारी सचिव और कलेक्टर नियमित समीक्षा करें। अफवाहों और भ्रामक खबरों से बचने के लिए आमजन तक समय पर तथ्यात्मक जानकारी पहुंचाना सुनिश्चित करें। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पश्चिम एशिया संकट पर शुक्रवार को सभी राज्यों के साथ विस्तृत चर्चा कर आश्वस्त किया है कि आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति सुचारू रूप से जारी रहेगी।

भ्रामक खबरों का तत्काल संज्ञान

बैठक में निर्देश दिए गए कि गैस, पेट्रोल और डीजल की आपूर्ति से संबंधित समाचारों पर निगरानी रखी जाए। भ्रामक खबरों से भय की स्थिति उत्पन्न हो सकती अतः ऐसी खबरों का तत्काल संज्ञान लेकर वास्तविक जानकारी जनता तक पहुंचाई जाए। सोशल मीडिया की भी विशेष निगरानी रखने के निर्देश दिए गए।

भाजपा स्थापना दिवस से पखवाड़े भर चलेंगे कार्यक्रम

रायपुर। 16 अप्रैल को भाजपा अपना 47वां स्थापना दिवस मनाएगी। इसके लिए देशभर में विशेष तैयारियां की गई हैं। इसी कड़ी में छत्तीसगढ़ के सभी जिलो में विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन तय किए गए हैं। स्थापना दिवस से पखवाड़े भर लगातार कार्यक्रम होंगे। राष्ट्रीय नेतृत्व द्वारा तय कार्यक्रमों के लिए प्रदेश भाजपा संगठन द्वारा प्रदेश स्तरीय समिति का गठन किया गया है। समिति के संयोजक भाजपा प्रदेश महामंत्री यशवंत जैन होंगे। समिति में रंजना साहू, जी. वेंकटराव, शिवनाथ यादव, ऋतु चौरसिया एवं कमल गर्ग सदस्य बनाए गए हैं। प्रदेश संयोजक यशवंत जैन ने बताया, पार्टी द्वारा प्रतिवर्ष भाजपा स्थापना दिवस से लेकर पूरे पखवाड़े भर भारतीय जनता पार्टी राष्ट्रीय नेतृत्व के आह्वान पर पूरे देश में विभिन्न कार्यक्रम कार्यक्रम प्रतिवर्ष करती है। समिति द्वारा पूरे पखवाड़े भर विभिन्न जिलों के कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार कर आयोजन सुनिश्चित किया जाएगा।

कांग्रेस का आरोप- टारगेट पूरा करने वाहनों का जबरिया चालान

ई चालान के नाम पर वसूली के खिलाफ कांग्रेस का प्रदर्शन

शहर सत्ता/रायपुर। ट्रैफिक पुलिस द्वारा वाहनों का ई-चालान के माध्यम से आम जनता से की जा रही कथित वसूली के विरोध में शहर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्रीकुमार शंकर मेनन के नेतृत्व में जोरदार प्रदर्शन किया गया। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने इस कार्रवाई को आम नागरिकों पर आर्थिक बोझ डालने वाला बताते हुए तत्काल रोक लगाने की मांग की। कांग्रेस कमेटी के अनुसार रायपुर शहर में 25 लाख से अधिक वाहन हैं। प्रतिदिन 2500 से 3000 ई-चालान काटे जा रहे हैं, आम जनता से जबरिया वसूली की जा रही। कांग्रेस ने यह भी सुझाव दिया कि कबीर नगर के सामने रिंग रोड स्थित सड़क निर्माण क्षेत्र में कैमरे लगाए जाएं, ताकि वास्तविक ट्रैफिक नियम उल्लंघनों पर ही कार्रवाई हो सके। इसके अलावा जहां जहां कैमरे नहीं हैं. वहां साइन बोर्ड और चेतावनी बोर्ड लगाए जाने की भी मांग की गई। कांग्रेस नेताओं ने यह भी कहा कि कार्रवाई में समानता होनी चाहिए। भाजपा के वरिष्ठ नेताओं के निवास के सामने खड़ी वाहनों पर पहले चालान कर उदाहरण प्रस्तुत किया जाए, उसके बाद आम जनता पर कार्रवाई की जाए। कांग्रेस ने आरोप लगाया कि एक ओर सरकार महतारी वंदन योजना के तहत महिलाओं को 1000 देने का दावा कर रही है, वहीं दूसरी ओर आम नागरिकों से 2000 से 5000 तक के ई-चालान के माध्यम से वसूली की जा रही है, जो पूरी तरह अन्याय है। ट्रैफिक कमिश्नर से चर्चा के दौरान कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल ने मांग रखी कि शहर में हेलमेट के नाम पर भेजे जा रहे ई-चालान पर तत्काल रोक लगाई जाए। साथ ही, ई-चालान के मैसेज से आम लोगों में दुविधा और शंका की स्थिति बन रही है, इसलिए पुलिस प्रशासन को पारदर्शी और अधिकृत तरीके से स्पष्ट संवाद स्थापित करना चाहिए।

गैस सिलेंडर वितरण में शहरी और ग्रामीण में भेदभावः धनेंद्र साहू

शहर सत्ता/रायपुर। पूर्व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं वरिष्ठ कांग्रेस नेता धनेंद्र साहू ने गैस सिलेंडर वितरण मामले में शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में भेदभाव का आरोप लगाते हुए राज्य सरकार के विरुद्ध कड़ा विरोध जताया है। उनका कहना है कि छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा गैस सिलेंडर रीफिलिंग की समय सीमा को लेकर हाल ही में लिया गया निर्णय अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण एवं भेदभावपूर्ण है। सरकार ने एक ही प्रदेश की जनता के बीच 'शहरी' और 'ग्रामीण' का भेद कर जो निर्णय लिया है, वह न केवल तर्कहीन है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था और गृहणियों की सुविधा पर सीधा प्रहार है।

एक बयान में उन्होंने कहा है कि छत्तीसगढ़ शासन ने कहा है कि सरकार के निर्देशों के अनुसार जहां शहरी उपभोक्ताओं को हर 25 दिनों में एक गैस सिलेंडर देने का प्रावधान किया गया है, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों के परिवारों के लिए यह समय सीमा 45 दिन निर्धारित की गई है। यह स्पष्ट रूप से ग्रामीण जनता के साथ अन्याय है। क्या ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले परिवारों की आवश्यकताएं कम हैं या उनके परिवार छोटे हैं? एक ओर सरकार उज्ज्वला योजना और धुआं-मुक्त रसोई के बड़े-बड़े दावे करती है, वहीं दूसरी ओर ग्रामीण जनता को 45 दिनों तक सिलेंडर के लिए इंतजार करने को मजबूर किया जा रहा है। यह निर्णय ग्रामीण आबादी को पुनः लकड़ी और कोयले के चूल्हे की ओर धकेलने जैसा है। श्री साहू ने मांग की है कि सरकार इस भेदभावपूर्ण आदेश को तत्काल प्रभाव से वापस ले। पूरे प्रदेश में 'एक राज्य, एक नियम' के तहत गैस सिलेंडर वितरण की समान समय सीमा सुनिश्चित की जाए। ग्रामीण क्षेत्रों में गैस सिलेंडर की आपूर्ति व्यवस्था को सुदृढ़ किया जाए। कांग्रेस पार्टी स्पष्ट करती है कि यदि सरकार इस जनविरोधी फैसले को वापस नहीं लेती है, तो सड़क से लेकर सदन तक ग्रामीण जनता के हक की लड़ाई लड़ी जाएगी और उग्र आंदोलन किया जाएगा।

वित्त मंत्री ओपी का पूर्व सीएम भूपेश बघेल पर पलटवार

शहर सत्ता/रायपुर। रायपुर। एक्साइज ड्यूटी में कटौती को लेकर कांग्रेस और पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के बयानों पर वित्त मंत्री ओपो चौधरी ने पलटवार किए। उन्होंने सोशल मीडिया एक्स पर लिखा कि जनता को गुमराह करने वाले पहले इतिहास वाद कर लें। कोविड के दौरान भी जब लोग आर्थिक मुश्किलों में थे, तब पूर्ववर्ती सरकार ने पेट्रोल पर बैट बढ़ाकर आपदा को अवसर बनाकर वसूली की थी। आज दुनिया युद्ध और वैश्विक हालात के कारण महंगे तेल से जूझ रही है। तब लोगों पर बोझ न बढ़े इसलिए प्रधानमंत्री ने एक्साइज ड्यूटी कम करने का निर्णय लिया है। वित्त मंत्री ने पूर्व सीएम की तरफ संकेत कर कहा कि जनता को राहत मिल रही इससे आपको तकलीफ है। आपके समय में आपदा वसूली का अवसर था। मोदी के नेतृत्व में संकट भी राहत देने का संकल्प है।

धान संग्रहण केन्द्रो में लाखो टन धान पड़ा सूख रहा, सरकार मीलरो को धान नहीं दे रही

कमीशन नहीं मिलने पर धान नहीं उठवा रही सरकार - दीपक बैज

रायपुर। कांग्रेस ने संग्रहण केन्द्रो पर धान खुले मे पड़े रहने पर चिंता व्यक्त की है प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा की भ्रष्टाचार करने की नीयत से भाजपा सरकार संग्रहण केन्द्रो से मीलरो को मीलिंग के लिये धान नहीं दे रही, ताकि धान खराब होने के नाम पर एवं खुले बाजार में निलामी करके भ्रष्टाचार किया जा सके। पूरे प्रदेश में लाखां मीट्रिक टन उठाव के अभाव में संग्रहण केन्द्रो में जमा पड़ा है। पुरे प्रदेश मे 24 लाख टन से अधिक धान खुले मे पड़ा है। अकेले बेमेतरा जिले में 7 लाख मीट्रिक टन से अधिक धान जाम पड़ा हुआ है।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि जब मीलर सरकार से अनुबंध के तहत धान लेने को तैयार है। फिर सरकार धान को मिलर्स को क्यों सौंप नहीं रही है? जितने लंबे समय तक धान संग्रहण केन्द्रों में रखा जायेगा, उतना ही भ्रष्टाचार का जोखिम बढ़ेगा और उतना ही धान खराब होने और वजन कम होने का खतरा रहेगा, यानी हर दिन के साथ सरकार खुद अपने नुकसान को बढ़ा रही है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि जितने लंबे समय तक धान खुले में पड़े रहेगा, नमी का मौसम का असर धान पर पड़ेगा। गुणवत्ता में गिरावट आयेगी और भ्रष्टाचार की गुंजाईश बढ़ेगी तथा एक बार फिर से चूहों पर जिम्मेदारी थोपी जायेगी।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा की मिलरो और सरकार के बीच कमीशन का भी झगड़ा चल रहा मार्कफेड के जिला मैनेजरो के पास 20 रु. टन के हिसाब से वसूली जमा करने पर ही डी ओ दिया जा रहा इसलिए भी उठाव नहीं हो पा रहा।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि जब सरकार को ये सारे जोखिम पहले से पता है, तब मिलर्स धान लेने को तैयार है, जब उद्योग संघ भी लिखित में मांग कर चुका है, तो फिर धान को रोककर रखने की जिद क्यों की जा रही है? सरकार इस धान को नीलामी के जरिए बेचने की तैयारी में है। 3100 में खरीद कर 2000 में बेचकर कमीशन खोरी की जायेगी।

भारोत्तोलन में 160 किलोग्राम उठाकर छत्तीसगढ़ को दिलाया पहला स्वर्ण

निकिता ने रचा इतिहास

रायपुर। खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स 2026 में छत्तीसगढ़ की बेटी निकिता ने राज्य को पहला स्वर्ण पदक दिलाकर इतिहास रच दिया है। राजधानी रायपुर स्थित पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में निकिता ने महिला 77 किलोग्राम भारोत्तोलन वर्ग में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए कुल 160 किलोग्राम वजन उठाकर प्रथम स्थान हासिल किया।

प्रतियोगिता में निकिता ने स्नैच में 70 किलोग्राम तथा क्लीन एंड जर्क में 90 किलोग्राम वजन उठाया। दोनों ही वर्गों में उन्होंने संतुलित और प्रभावशाली प्रदर्शन करते हुए अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वियों को पीछे छोड़ दिया। इस शानदार जीत के साथ उन्होंने न केवल स्वर्ण पदक अपने नाम किया, बल्कि छत्तीसगढ़ को खेलों में मजबूत शुरुआत भी दिलाई। प्रतियोगिता में दूसरे स्थान पर ओडिशा की श्रीमती जानी रहीं, जिन्होंने कुल 126 किलोग्राम वजन उठाया, जबकि तीसरा स्थान असम की जॉयश्री पाटिर को मिला, जिनका कुल प्रदर्शन 118 किलोग्राम रहा।

निकिता की इस उपलब्धि से पूरे राज्य में खुशी की लहर दौड़ गई है। खेल प्रेमियों और अधिकारियों ने उनकी मेहनत, समर्पण और आत्मविश्वास की सराहना की है। यह जीत छत्तीसगढ़ के युवा खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी और आने वाले मुकाबलों में राज्य के खिलाड़ियों का मनोबल और बढ़ाएगी। खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स 2026 में देशभर के जनजातीय प्रतिभागी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे हैं। ऐसे में निकिता का यह स्वर्ण पदक न केवल व्यक्तिगत उपलब्धि है, बल्कि छत्तीसगढ़ के खेल इतिहास में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में दर्ज हो गया है।

शाबाश निकिता बिटिया... छत्तीसगढ़ को आप पर गर्व है : मुख्यमंत्री

खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स 2026 में छत्तीसगढ़ की बेटी निकिता ने शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रदेश को पहला स्वर्ण पदक दिलाया है। निकिता ने महिला 77 किलोग्राम भारोत्तोलन स्पर्धा में 160 किलोग्राम वजन उठाकर यह उपलब्धि हासिल की और छत्तीसगढ़ का नाम राष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित किया। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए निकिता को हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह जीत केवल एक पदक नहीं, बल्कि प्रदेश की बेटियों के अदम्य साहस, कठिन परिश्रम और सपनों की उड़ान का प्रतीक है। मुख्यमंत्री श्री साय ने अपने संदेश में कहा, "शाबाश निकिता बिटिया... छत्तीसगढ़ को आप पर गर्व है।"

कम उम्र में अनाथ हुए मिजोरम के इसाक चोट की चिंता को पीछे छोड़ जीता स्वर्ण

रायपुर। मिजोरम के युवा वेटलिफ्टर इसाक मालसावमटलुआंगा 16 साल की उम्र पूरी करने से पहले ही अपने माता-पिता दोनों को खोने के बाद लगभग खेल छोड़ने की कगार पर पहुंच गए थे। इस दोहरी त्रासदी ने इस मिजो किशोर को अंदर तक तोड़ दिया था, लेकिन उनके बचपन के कोच और चाचा-चाची के सहारे ने उनके खेल करियर को संभाल लिया। 18 वर्षीय इसाक ने कड़ा संघर्ष करते हुए खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स 2026 में पुरुषों के 60 किग्रा वर्ग में स्वर्ण जीतकर अपने परिवार को गर्व महसूस कराया।

पीठ की तकलीफ से जूझते हुए भी इसाक ने क्लीन एंड जर्क में शानदार प्रदर्शन किया। स्नैच में दूसरे स्थान पर रहने के बाद उन्होंने कुल 235 किग्रा वजन उठाकर स्वर्ण पदक अपने नाम किया। जीत के तुरंत बाद उनके चाचा ने उन्हें गले लगा लिया, जो इस युवा खिलाड़ी के जीवन में एक मार्गदर्शक की तरह रहे हैं। इसाक के पिता हेमिंग मालसावमटलुआंगा की 2018 में एक सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी, उसी साल उन्होंने वेटलिफ्टिंग की शुरुआत की थी। परिवार के इकलौते बेटे होने के कारण उनके सामने यह सवाल खड़ा हो गया था कि वह खेल जारी रखें या परिवार की जिम्मेदारियां संभालने के लिए कमाई पर ध्यान दें। इसाक ने साई मीडिया से बातचीत में बताया," उस समय मेरे बचपन के कोच सोमा ने मुझे बहुत प्रेरित किया और वेटलिफ्टिंग जारी रखने के लिए कहा।" हालांकि, 2024 में हिमाचल प्रदेश में आयोजित यूथ नेशनल चौंपियनशिप में 60 किग्रा वर्ग में रजत पदक जीतने के बाद जब उनका प्रदर्शन बेहतर होने लगा, तभी एक और निजी झटका लगा। उनकी मां को कैंसर का पता चला, जिससे परिवार पर भावनात्मक और आर्थिक दबाव बढ़ गया। इस कठिन समय में उनके चाचा और चाची ने उनका सहारा बना। आइजोल के रामह्लुन वेंगथर इलाके में एक छोटे से रेस्तरां में काम करने वाला यह दंपति इसाक को अपने साथ ले आया और उसकी पढ़ाई और वेटलिफ्टिंग दोनों को बिना रुकावट जारी रखने में मदद की।

86 किलोग्राम भारोत्तोलन में महाराष्ट्र की साक्षी बुरकुले ने जीता स्वर्ण

रायपुर। खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स 2026 के तहत 86 किलोग्राम भारोत्तोलन प्रतियोगिता महिला वर्ग में खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए दर्शकों का उत्साह बढ़ाया। इस स्पर्धा में महाराष्ट्र की साक्षी बंडू बुरकुले ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक कब्जा किया। यह प्रतिस्पर्धा पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर की खेल मैदान में आयोजित की जा रही है। साक्षी बुरकुले ने स्नैच में 68 किलोग्राम और क्लीन एंड जर्क में 82 किलोग्राम वजन उठाकर कुल 150 किलोग्राम के साथ पहला स्थान हासिल की, उनका प्रदर्शन पूरे मुकाबले में सबसे मजबूत रहा।

छत्तीसगढ़ की रिशिका कश्यप ने भी शानदार प्रदर्शन करते हुए रजत पदक हासिल की। उन्होंने कुल 121 किलोग्राम (स्नैच 55 किलोग्राम, क्लीन एंड जर्क 71 किलोग्राम) वजन उठाया। वहीं असम की बिटुपुना देओरी ने 118 किलोग्राम के साथ कांस्य पदक अपने नाम किया। प्रतियोगिता में असम की लिंडा 114 किलोग्राम के साथ चौथे स्थान पर रहीं, जबकि त्रिपुरा की सुमी मोग (77 किलोग्राम) और आंध्र प्रदेश की जेसी रानी (61 किलोग्राम) क्रमशः पांचवें और छठे स्थान पर रहीं। इस स्पर्धा में खिलाड़ियों के बीच कड़ी प्रतिस्पर्धा देखने को मिली, जहां हर प्रतिभागी ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने का प्रयास किया। दर्शकों ने प्रत्येक खिलाड़ियों की हौंसला अफजाई करते हुए खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन कर इस पूरे आयोजन को जीवंत बनाए रखा।

वेटलिफ्टिंग स्पर्धा में अरुणाचल पुरुष और असम महिला वर्ग में ओवरऑल चैम्पियन

रायपुर। इंडिया ट्राइबल गेम्स 2026 के अंतर्गत वेटलिफ्टिंग प्रतियोगिता समापन के साथ ही चैम्पियनशिप टीम के परिणाम भी घोषित किए गए, जिसमें पुरुष वर्ग में अरुणाचल प्रदेश ने ओवरऑल चैम्पियन बनने का गौरव हासिल किया। वहीं मिजोरम फर्स्ट रनरअप और असम सेकंड रनरअप रहा। महिला वर्ग में असम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए ओवरऑल चैम्पियन का खिताब अपने नाम किया, जबकि ओडिशा फर्स्ट रनरअप और छत्तीसगढ़ सेकंड रनरअप रहा। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर स्थित पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय में आयोजित खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स 2026 के अंतर्गत वेटलिफ्टिंग प्रतियोगिताओं का आज शानदार समापन हो गया। पूरे आयोजन के दौरान देशभर से आए खिलाड़ियों ने ताकत, तकनीक और आत्मविश्वास का बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए दर्शकों को रोमांचित किया। समापन समारोह के अवसर पर मंत्री केदार कश्यप और रायपुर महापौर श्रीमती मीनल चौबे विशेष रूप से उपस्थित रहीं।

दावणगेरे के रहने वाले मणिकांता बेंगलुरु के बसवनगुड़ी एक्वाटिक सेंटर में करते हैं प्रशिक्षण

कर्नाटक के मणिकांता एल ने जीते आठ स्वर्ण और एक रजत

रायपुर। पिछले कुछ दिनों से कर्नाटक के तैराक मणिकांता एल का जीवन किसी ऐसे खिलाड़ी जैसा रहा है, जिसे हर कुछ मिनटों में खुद को फिर से तैयार कर अगली चुनौती के लिए उतरना होता है। 21 वर्षीय मणिकांता ने रायपुर में जारी पहले खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स में शानदार प्रदर्शन करते हुए आठ स्वर्ण और एक रजत पदक अपने नाम किए। नौ स्वर्ण पदकों का लक्ष्य भले ही अधूरा रह गया, लेकिन उनका दबदबा पूरे प्रतियोगिता में साफ नजर आया। इस दौरान उनके लिए सबसे बड़ी चुनौती सिर्फ रेस जीतना नहीं, बल्कि हर रेस के बीच बहुत कम समय होने के कारण खुद को शारीरिक और मानसिक रूप से तैयार करना भी था। कई बार उन्हें पूल से निकलकर सीधे पदक समारोह में जाना पड़ता और फिर तुरंत अगली रेस के लिए लौटना होता था।

बैकस्ट्रोक एक्सपर्ट मणिकांता ने खुद को चुनौती देते हुए चारों स्ट्रोक बैकस्ट्रोक, फ्रीस्टाइल, बटरफ्लाई और बैकस्ट्रोक में भाग लिया, ताकि अपनी टीम के लिए ज्यादा से ज्यादा पदक जीत सकें। खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स के पहले संस्करण के सबसे सफल खिलाड़ी मणिकांता ने साई मीडिया से कहा, "अलग-अलग स्ट्रोक्स के बीच तालमेल बैठाना आसान नहीं होता, क्योंकि हर रेस की रणनीति अलग होती है। ऊपर से रेस के बीच समय भी बहुत कम था, जो इसे और चुनौतीपूर्ण बना रहा था।" प्रतिदिन सिर्फ छह रेस होने के बावजूद मणिकांता पहले तीन दिनों में लगभग हर दूसरी रेस में उतर रहे थे। इस दौरान उन्हें रेस के बीच पदक समारोह में भी शामिल होना पड़ता था। इस कठिन शेड्यूल का असर तीसरे दिन की आखिरी रेस में दिखा, जहां 50 मीटर फ्रीस्टाइल में उन्हें अपने ही राज्य के धुनीश एम से पीछे रहते हुए रजत पदक से ही संतोष करना पड़ा। उन्होंने कहा, "उस रेस तक पहुंचते-पहुंचते मेरे पेट की मांसपेशियों में जकड़न होने लगी थी, जिससे मेरी गति प्रभावित हुई। लेकिन कुल मिलाकर मैं अपने प्रदर्शन से खुश हूं। पहली बार मैंने इतने सारे इवेंट्स में, वो भी अलग-अलग स्ट्रोक्स में हिस्सा लिया।"

मणिकांता को तैराकी की प्रेरणा उनके चाचा मंजूनाथ से मिली, जो खुद राष्ट्रीय स्तर के तैराक रह चुके हैं। इससे पहले वह इस साल जयपुर में हुए खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स में चार स्वर्ण पदक जीत चुके हैं, जिनमें 100 मीटर और 200 मीटर बैकस्ट्रोक के व्यक्तिगत खिताब शामिल हैं। दिलचस्प बात यह है कि अपने करियर की शुरुआत में मणिकांता बटरफ्लाई इवेंट पर ज्यादा ध्यान देते थे, लेकिन 2019 में कंधे की चोट के बाद उनके कोच सिन्जो ने उन्हें बैकस्ट्रोक पर फोकस करने की सलाह दी।

धुरंधर के बाद अब 'पेड्डी' से धमाल मचाएगी जियो स्टूडियो

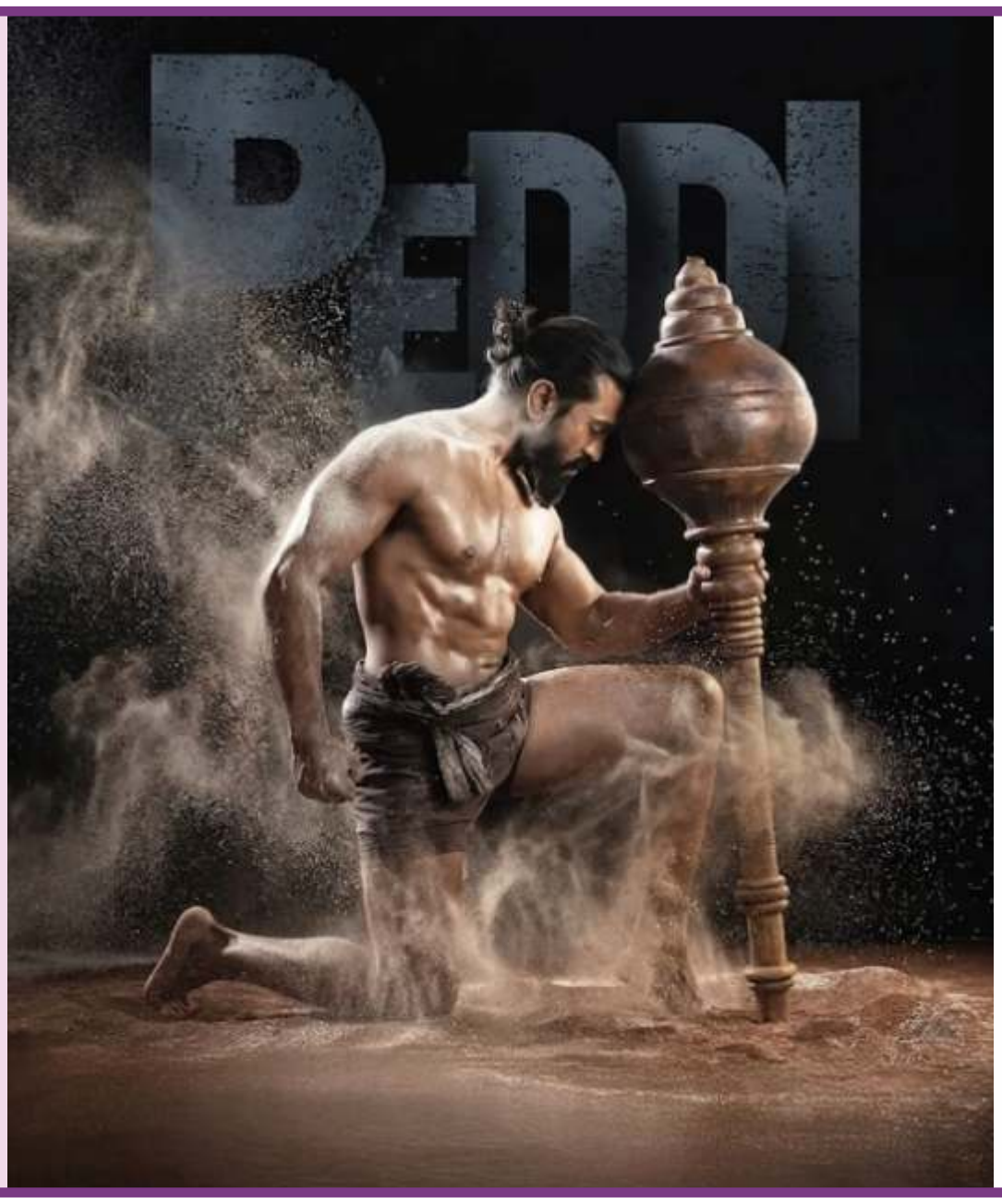

अपकमिंग फिल्म "पेड्डी" से रामचरण का पहलवान का लुक इंटरनेट पर धूम मचा रहा है. सिर्फ फैंस ही नहीं, बल्कि आम दर्शक भी पैन इंडिया स्टार की ज़बरदस्त फिजिक देखकर हैरान हैं. इस बीच बड़ी खबर ये है कि 'धुरंधर' के बाद जियो स्टूडियों ने रामचरण संग मोटी डील की है और वे 'पेड्डी' से हिंदी बेल्ट में धमाल मचाने की तैयारी कर रहे हैं. 'धुरंधर' की रिलीज़ के बाद जियो स्टूडियो की पॉपुलैरिटी भी बढ़ गई है. पहला पार्ट सुपर हिट होने के बाद, दूसरा पार्ट हाल ही में रिलीज़ हुआ है और यह देश की अब तक की सबसे बड़ी ब्लॉकबस्टर बनने की राह पर तेजी से आगे बढ़ रहा है. बता दे कि जियो स्टूडियो ने ही 'धुरंधर' को प्रोड्यूस किया था और उन्होंने ही पूरे देश में इस फिल्म को रिलीज किया.

अब,इसने राम चरण की अपकमिंग फ़िल्म 'पेड्डी' के हिंदी वर्जन के लिए पैन इंडिया सुपरस्टार से हाथ मिलाया है. जियो स्टूडियो इस फ़िल्म को पूरे उत्तर भारत में डिस्ट्रीब्यूशन के आधार पर रिलीज़ करेगा. इस डील पर हाल ही में मुहर लगी है. इसके साथ ही, राम चरण की ये अपकमिंग फिल्म हिंदी भाषी क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर रिलीज़ होने के लिए तैयार है. राम चरण के बर्थडे पर मेकर्स ने 'पेड्डी' की पहली झलक जारी की थी. इसी के साथ 'पेड्डी' में राम चरण के एथलेटिक लुक की हर कोई तारीफ़ कर रहा है. बता दें कि 'पेड्डी' एक स्पोर्ट्स ड्रामा फ़िल्म है, जिसे बुची बाबू ने डायरेक्ट किया है. इसमें जाह्नवी कपूर मुख्य भूमिका में हैं और ए.आर. रहमान ने इसका म्यूज़िक दिया है. वेंकट सतीश किलारू इस फ़िल्म के प्रोड्यूसर हैं. इसे वृद्धि सिनेमा के बैनर तले बनाया गया है. फिल्म में शिवा राजकुमार, दिव्येंदु शर्मा, जगपति बाबू और बोमन ईरानी भी अहम किरदारों में नज़र आएंगे. ये फिल्म 30 अप्रैल को रिलीज होगी.

दस दिन में 'धुरंधर 2' 1200 करोड़ पार

रणवीर सिंह की फिल्म 'धुरंधर 2' जिस दिन से रिलीज हुई है उस दिन से बॉक्स ऑफिस पर राज कर रही है. फिल्म ने लगातार हर दिन 40 करोड़ से ज्यादा की कमाई कर इतिहास रच दिया है. फिल्म को बहुत पसंद किया जा रहा है. दूसरे हफ्ते में भी फिल्म धमाल मचा रही है. वहीं ओवरसीज मार्केट में भी फिल्म छाई हुई है.

फिल्म ने 10 दिनों में दुनियाभर में 1255 करोड़ का कलेक्शन कर लिया है. फिल्म ने दसवें दिन 62.85 करोड़ कमाए. वहीं फिल्म ने इंडिया में टोटल 930.44 ग्रॉस और 778.77 नेट कलेक्शन किया. फिल्म ने दसवें दिन ओवरसीज मार्केट में 29 करोड़ का कलेक्शन किया. वहीं टोटल फिल्म ने ओवरसीज 300 करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया है. फिल्म ने 325 करोड़ की कमाई की.फिल्म ने दसवें दिन हिंदी में 58 करोड़ कमाए. वहीं कन्नड़ में 30 लाख, मलयालम में 15 लाख, तमिल में 1.40 करोड़ और तेलुगू में 3 करोड़ कमाए थे.

फिल्म ने पहले दिन 145.55 करोड़ (पेड प्रिव्यू के साथ) कमाए. फिल्म ने दूसरे दिन 80.72 करोड़ की कमाई की. तीसरे दिन दिन फिल्म ने 113 करोड़ और चौथे दिन फिल्म ने 114.85 करोड़ कमाए. पांचवें दिन फिल्म की कमाई थोड़ी कम हुई और फिल्म ने 65 करोड़, छठे दिन 56.60 करोड़, सातवें दिन 48.75 करोड़, आठवें दिन 49.70 करोड़ और नौवें दिन 41.75 करोड़ कमाए.'धुरंधर 2' इंडियन सिनेमा की बड़ी फिल्मों में से एक बन गई है. आदित्य धर फिल्म धुरंधर और धुरंधर 2 के साथ देश के बड़े फिल्ममेकर्स में से एक बन गए हैं. धुरंधर 2 इन दिनों थिएटर में लगी है. वहीं धुरंधर का पहला पार्ट दिसंबर 2025 में रिलीज हुआ था. वो फिल्म भी 1300 करोड़ की कमाई के साथ ऑलटाइम ब्लॉकबस्टर हिट हो गई है. फिल्म को बहुत पसंद किया गया. दोनों फिल्मों में लीड रोल में रणवीर सिंह लीड रोल में हैं. वहीं अक्षय खन्ना, संजय दत्त, आर माधवन, अर्जुन रामपाल, सारा अर्जुन जैसे स्टार्स फिल्म का हिस्सा हैं.

पीयूष मिश्रा ने 'धुरंधर' को प्रोपेगेंडा फिल्म बताने पर जताई आपत्ति

रणवीर सिंह की फिल्म 'धुरंधर' ने बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचाकर रखा है. ये फिल्म कलेक्शन के मामले में ताबड़तोड़ रिकॉर्ड तोड़े ही जा रही है. तो वहीं इस फइल्म की तारीफ करने का मौका भी कोई हाथ से जाने नहीं दे रहा है. वहीं अब हाल ही में पीयूष मिश्रा ने भी धुरंधर की जमकर तारीफ की है. उन्होंने इस पइल्म को असली सिनेमा बताया है. साथ ही साथ उन्होंने फिल्म को प्रोपेगेंडा बताने पर भी आपत्ति जताई है.

क्या बोले पीयूष मिश्रा?

दरअसल हाल ही में पीयूष मिश्रा दिल्ली में आयोजित हो रहे इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में शामिल होने पहुंचे थे. इस दौरान जब धुरंधप फिल्म को लेकर डिस्कशन हुआ, तब उन्होंने फिल्म को प्रोपेगेंडा बताने पर उसका बचाव किया. पीयूष ने कहा, 'प्रोपेगेंडा और सिनेमा के बीच एक बारीक सी लाइन होती है. उदाहरण के लिए धुरंधर को ही ले लीजिए. इसका स्क्रीनप्ले बहुत ही शानदार है. इसे ही हम असली सिनेमा कहते हैं. मुझे बहुत धुरंधर पसंद आई. आप उसे प्रोपेगेंडा फिल्म नहीं कह सकते. ये एक सिंपल सी फिल्म है.' वैसे पीयूष मिश्रा से पहले कई ऐसे सेलेब्स और सिनेमा के दिग्गज हैं जिन्होंने इस फिल्म की जमकर तारीफ की है. हाल ही में टी-सीरीज के मालिक भूषण कुमार ने भी इस फिल्म की तारीफ की और साथ ही साथ रणवीर सिंह के काम के लिए और आदित्य धर के लिए उन्हें नेशनल अवॉर्ड देने की मांग भी की है. इसके अलावा रामचरण, ऋषभ शेट्टी, एसएस राजामौली, करण जौहर, अल्लू अर्जुन, अक्षय कुमार जैसे सितारों ने भी फिल्म की जमकर तारीफ की है. बता दें कि 'धुरंधर 2' फिल्म 19 मार्च को रिलीज हुई थी. फिल्म की रिलीज के साथ ही इसने बॉक्स ऑफिस पर हंगामा मचा दिया था. फिल्म में रणवीर सिंह मुख्य किरदार में नजर आए. उनके साथ सारा अर्जुन, संजय दत्त, अर्जुन रामपाल, आर माधवन, गौरव गेरा, राकेश बेदी भी फिल्म में नजर आ रहे है।

महाकाली में नजर आएंगे अक्षय खन्ना

धुरंधर में अपनी बेहतरीन एक्टिंग से लोगों का दिल जीतने वाले अक्षय खन्ना अब अपनी अपकमिंग फिल्म को लेकर सुर्खियों में छाए हुए हैं. फैंस उन्हें नए कैरेक्टर में एक बार फिर से बड़े पर्दे पर देखने के लिए काफी बेताब नजर आ रहे हैं.हालांकि, फैंस को अब अक्षय खन्ना की अपकमिंग फिल्म के लिए ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ेगा. क्योंकि, वो जल्द ही महाकाली में दिखाई देने वाले हैं.मालूम हो धुरंधर की रिलीज से पहले ही ये घोषणा हो गई थी कि अक्षय खन्ना धुरंधर फिल्म में नजर आएंगे. लेकिन, धुरंधर की रिलीज के बाद से फैंस के अंदर अक्षय खन्ना को लेकर ज्यादा ही क्रेज देखने को मिल रहा है. इसी बीच महाकाली फिल्म को लेकर भी तरह-तरह के अपडेट्स सामने आ रहे हैं. अब खबर है कि साउथ का एक सुपरस्टार एक्टर इस फिल्म में कैमियो करने वाला है।

मनोरंजन की अनूठी विधा है गड़हा ददरिया

रामकुमार वर्मा

छत्तीसगढ़ में ददरिया गायन की प्राचीन परंपरा रही है। किसी समय में ददरिया गायन जीवन के एक अंग के रूप में जाना जाता था। ददरिया गायन की एक वैसी विधा है जो किसी भी समय कहीं पर भी गाया जाता है। एक अनगढ़ गायक को भी ददरिया गायन के प्रति समर्पित देखा जाता है। गड़हा ददरिया को प्रायः यात्रा करते समय चाहे वह पैदल हो, बैल गाड़ी में हो या किसी उत्सव समारोहों में हो मस्ती के साथ गाया जाता है। एकल और सामूहिक दोनों तरह से गायन किया जाता है। इसकी खास विशेषता होती है, इसमें सवाल जवाब का शामिल न होना । इसमें केवल खी या पुरुष पृथक पृथक रूप से गाते हैं। कहीं कहीं पर समूह में भी गाया जाता है।

विवाह के दौरान बारात प्रस्थान के बाद महिलाओं द्वारा मंडप के चारों ओर घूम घूम कर गाए जाने वाले ददरिया को गौतरी ददरिया कहा जाता है-

राम घरे धनुष लक्ष्मण धरे बाण,
सीता माई के खोजन बर निकलगे हनुमान । एक पेड़ आमा छत्तीस पेड जाम, देवी दाई के मंदिर में हावय भगवान।

इसी तरह आदिवासी अंचल में विवाह के दौरान महिलाओं द्वारा सवाल जवाब में ददरिया गायन किया जाता है। गायन के दौरान लंबे समय तक सवाल जवाब चलता रहता है-

कोन बन आमा रे कोन बन जाम। कोन बन ले ओ निकले मोर लक्ष्मण राम।
घाने ल लुबै गिरे ल कंसी। भगवान के मंदिर में बाजथे बंसी।

माता सीता ने स्नान किया था इस कारण नाम सीता नहानी

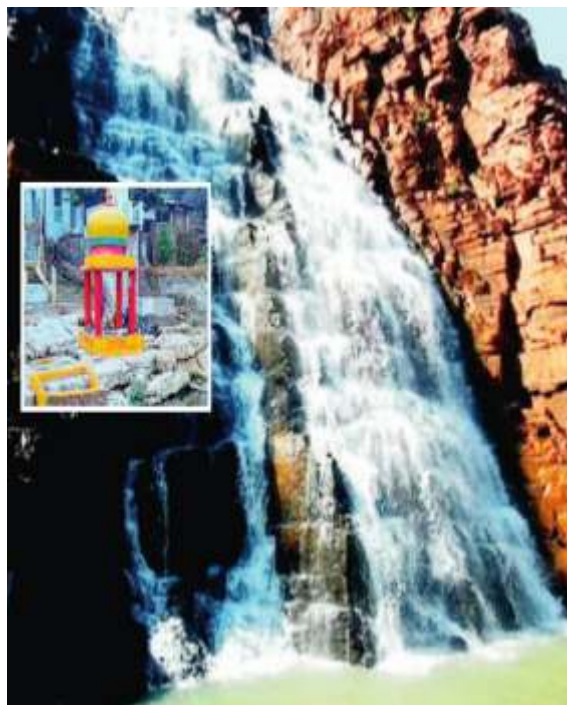

कमलेश यादव

छत्तीसगढ़ में राम वन गमन मार्ग चिन्हांकित किए गए हैं, लेकिन यहां का इतिहास वर्षों पुराना है। अनेक किंवदंतियों और नामकरण से प्रामाणिकता की पुष्टि भी होती है। राम वन गमन मार्ग का पड़ाव बस्तर के अनेक स्थानों पर देखी जाती है। कई स्थानों का नामकरण, शिलालेख और पुरातात्विक महत्व के स्थल आज भी पौराणिक काल के साक्षी के रूप में विद्यमान हैं 1 कहा जाता है कि दंतेवाड़ा से प्रभु श्रीराम तीरथगढ़ पहुंचे थे। जगदलपुर से 40 कि मी दूर स्थित कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान में प्रभु श्रीराम के प्रवास के संबंध में भी लोककथाएं प्रचलित हैं। तीरथगढ़ में कांगेर नदी सघन वनों और दुर्गम घाटियों के बीच एक मनोरम जलप्रपात बनाती है। यहां कांगेर नदी का पानी 300 फीट नीचे एक कुंड में गिरता है। मान्यता है कि इस कुंड में माता सीता ने स्नान किया था, इसलिए इसे सीता नहानी के नाम से भी जाना जाता है।

छत्तीसगढ़ के क्रांतिकारी रहे सुरेन्द्र साय

डुमन लाल धुव

अंग्रेजों ने संबलपुर राज्य पर अपनी कूटनीति से कब्जा कर लिया था। रियासत के राज सिंहासन पर अपने मन पसंद शासकों को बैठा कर वे जनता का शोषण करने लगे। चौहान वंश के वास्तविक उत्तराधिकारी होने के बावजूद सुरेन्द्र साय को गद्दी से दूर रखा गया। इससे प्रजा में असंतोष और विद्रोह की भावना पनपी। इसी अन्याय के खिलाफ सुरेन्द्र साय ने आदिवासी समाज, किसानों और आम जनता को संगठित किया। उनका उद्देश्य केवल राजसिंहासन पाना नहीं था. बल्कि जनता को अंग्रेजों और सामंती अत्याचार से मुक्त कराना था। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में जब पूरे देश में विद्रोह की आग भड़क उठी, उस समय वीर सुरेन्द्र साय ने संबलपुर अंचल को रणभूमि बना दिया।

छत्तीसगढ़ ओडिशा अंचल के महान जननायक वीर सुरेन्द्र साय का जन्म 23 जनवरी 1809 को तत्कालीन संबलपुर के खिंदकटा गांव में हुआ। यह वीर पुरुष उन्हीं शहीदों में हैं जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर ब्रिटिश सरकार की नींव हिला दी। अंग्रेजों ने संबलपुर राज्य पर अपनी कूटनीति से कब्जा कर लिया था। रियासत के राज सिंहासन पर अपने मन पसंद शासकों को बैठा कर वे जनता का शोषण करने लगे। चौहान वंश के वास्तविक उत्तराधिकारी होने के बावजूद सुरेन्द्र साय को गद्दी से दूर रखा गया। इससे प्रजा में असंतोष और विद्रोह को भावना पनपी। इसी अन्याय के खिलाफ सुरेन्द्र साय ने आदिवासी समाज, किसानों और आम जनता को संगठित किया। उनका उद्देश्य केवल राजसिंहासन पाना नहीं था. बल्कि जनता को अंग्रेजों और सामंती अत्याचार से मुक्त कराना था। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में जब पूरे देश में विद्रोह की आग भड़क उठी, उस समय वीर सुरेन्द्र साय ने संबलपुर अंचल को रणभूमि बना दिया।

उन्होंने अंग्रेजों की नीतियों का विरोध करते हुए अपने आदिवासी वीर साथियों उधम साय, मगर साय, अर्जुन साय और अन्य क्रांतिकारियों के साथ मिलकर अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध मोर्चा खोला। ब्रिटिश सरकार ने उन्हें कई बार उन्हें पकड़ने की कोशिश की, किन्तु उनकी युद्ध नीति के आगे अंग्रेज नाकाम रहे। अंततः छल कपट से उन्हें गिरफ्तार कर कई बार जेल में डालते रहे। उन्हें अकलपुर और हजारीबाग की जेलों में वर्षों तक कैद कर रखा गया। लंबी कैद से उनकी सेहत बिगड़ने लगी, परन्तु अंग्रेजों ने उन्हें रिहा करने से इंकार कर दिया। 28 फरवरी 1884 को आसाम की अकलपुर जेल में सुरेन्द्र साय ने अंतिम सांस ली। आज भी उनका नाम जनजातीय गौरव और स्वतंत्रता के अमर सेनानी के रूप में लिया जाता है।

बुड़े निही ते पाय के नाव होगे बुड़ेनी

लोमश कुमार धुव

राजिम नगरी ले 48 कि मी दूरी म बुड़ेनी गांव हे। पहली ए जगा ह जंगल झाड़ी ले घिरे रीहिस। जंगली जानवर मन के बसेरा रीहिस। पैरी नदिया के तीर में बसे हे गांव ह। जादा घर के छानी नी रोहिस। पुरा पानी में नदिया ह बढ़त गिस, अऊ वोकर खड़ ह घूरत धूरत गांव तीर में आगे। धीरे धीरे अइसे होगे कि चौमास म गांव के चारों मुड़ा पानी में घिर जाए त संसों हो जाय कभु गांव ह बुड़ जाहि का तब जुन्ना सियान मन कहय हमर सती माता के किरपा ले बाबू हो हमर ए गांव ह बुड़े निही कहय ।

जुन्ना सियान मन ल पक्का भरोसा रीहिस कि माता सती के दया मया ले हमर गांव कभु नी बुड़े। फेर पुरा पानी आवय त लईका जवान मन ल डर हो जाय। तभो ले डर के मारे ऊहा ले उसल के थोरीक दूरीहा में बसे लगिन। पहली वो गांव के कोनो नाव नी रोहिस । फेर बस्ती ल बुड़े निही कहय। धीरे धीरे बोमे हो अक्षर ह लोप होगे अऊ गांव के नाव बुड़ेनी होगे। अब इही नाव ह सबर दिन बर घरागे अऊ चलन में आगे। अभी घलव ओ जुन्ना डीही के चिन्हारी हावय। सती माता के किरपा ले आज तक गांव ह कभु नी बुड़ीस। अब इन्हा पहली जईसे जंगल नी रहीगे। इहा अब खेत खार बारी बखरी बन गेहे।

देखने को भी नहीं मिलते अब घानी

डा. प्रकाश पतंगीवार

प्राचीन काल में जब मानव ने खाना पीना, फल फूल छोड़ कर अन्न खाने लगा, तब अनाज के साथ तेल उपजाना या तेल का महत्व समझा जाने लगा। पहले तिलहन को यूं खाता रहा। फिर तिलहन से तेल निकालना भी सीखा। प्राचीन काल में तेल निकालने के साधन को तिलही या तिरही कहा जाता था। इसका निर्माण स्वयं मनुष्य ने किया था। लकड़ी के दो मोटे लट्ठों का आधार लेकर प्रणालिका द्वारा कुचल दिया जाता था। तिलहन को मोहलाईन वृक्ष के तने की छाल से खूब रगड़ा जाता था। प्रणालिका से तेल निचुड़कर सतह पर रखे बर्तन में टपकने लगता था। तिरही से तेल निकालने के लिए धैर्य की आवश्यकता होती है। तिरही का उपयोग प्राचीन काल से मध्य काल तक सतत जारी रहा। मनुष्य के दैनिक जीवन में तेल का महत्वपूर्ण स्थान है। अगर तेल न होता, तो हमारे पकवान कैसे पकते। अच्छा हुआ जो मानव ने तिलहन को पहचाना और तेल के अलग अलग प्रयास किए। तब जमाना मशीन का नहीं होता था। जब मनुष्य का धैर्य टूट गया, पशु बल से काम लिया जाने लगा, इसे कोल्हू कहा गया। आंचलिक भाषा में इसे घानी बोला जाता है। घान यानी तादात, यह तिलहन डालने की गणना पर आधारित होता है। घानी में तिलहन डालने से वह स्पेलर (अलग अलग) कर देता है। तेल और खली अलग अलग हो जाते हैं। वर्तमान में कोल्हू गायब हो चुके हैं। पहले हर वि ख में कोल्हू या घानी वह भी बहुतायत में होते हैं। आज की स्थिति में उनके निशान भी नहीं मिलते हैं। घानी का तेल सर्वश्रेष्ठ माना जाता था, क्योंकि तेल पेरते समय तापमान कम होता था। पोषक तत्व बना रहता था, तीक्ष्ण गंध होती थी, तीखा होता था।

33 चामसुन्दर में 28 लुंजपुंज

आईएएस बन गए पर नहीं साबित हो रहे अच्छे कलेक्टर

मुख्य संवाददाता/शेख आबिद
मोबाईल नंबर 8109802829

आवेदनों पर फैसला करने के बदले कर रहे सिर्फ मार्क

पटवारी, आरआई, तहसीलदार, एसडीएम से लोग बेज़ार

एक वक्त था जब छत्तीसगढ़ में दमदार कलेक्टरों की तूती बोलती थी। अब आलम यह है कि 33 चामसुन्दर में से 28 लुंजपुंज हैं। पहनावे और तामझाम में अव्वल लेकिन उनका कामकाज कुछ ज्यादा ही लुंजपुंज सा है। इसका खामियाज़ा परवर्ती सरकारों ने भी भुगता है और अगर वक्त रहते सुधारा नहीं गया तो समझो इस बार भी...! फैसले लेने, शासन के नीति-निर्देशों पर काम करने और आम जनता से रूबरू मुलाकात करने के बदले सिर्फ एक सूत्रीय एजेंडा में लगे हैं। जिनका कैरेक्टर ठीक हैं वो छोटे-मोटे लॉ एंड आर्डर पर फैसला लेने के लिए भी मुख्य सचिव और सीएम सचिवालय की बात जोहते रहते हैं। बचे-खुचे कमर के ढीले या जेब से बेज़ार हैं। मगर अब तो ये हाल है कि अधिकांश कलेक्टरों को नेताओं या आम आदमी से कोई वास्ता नहीं रह गया है। सीएम, सीएस और जीएडी सिकेट्री रजत कुमार को समय रहते कुछ करना होगा।

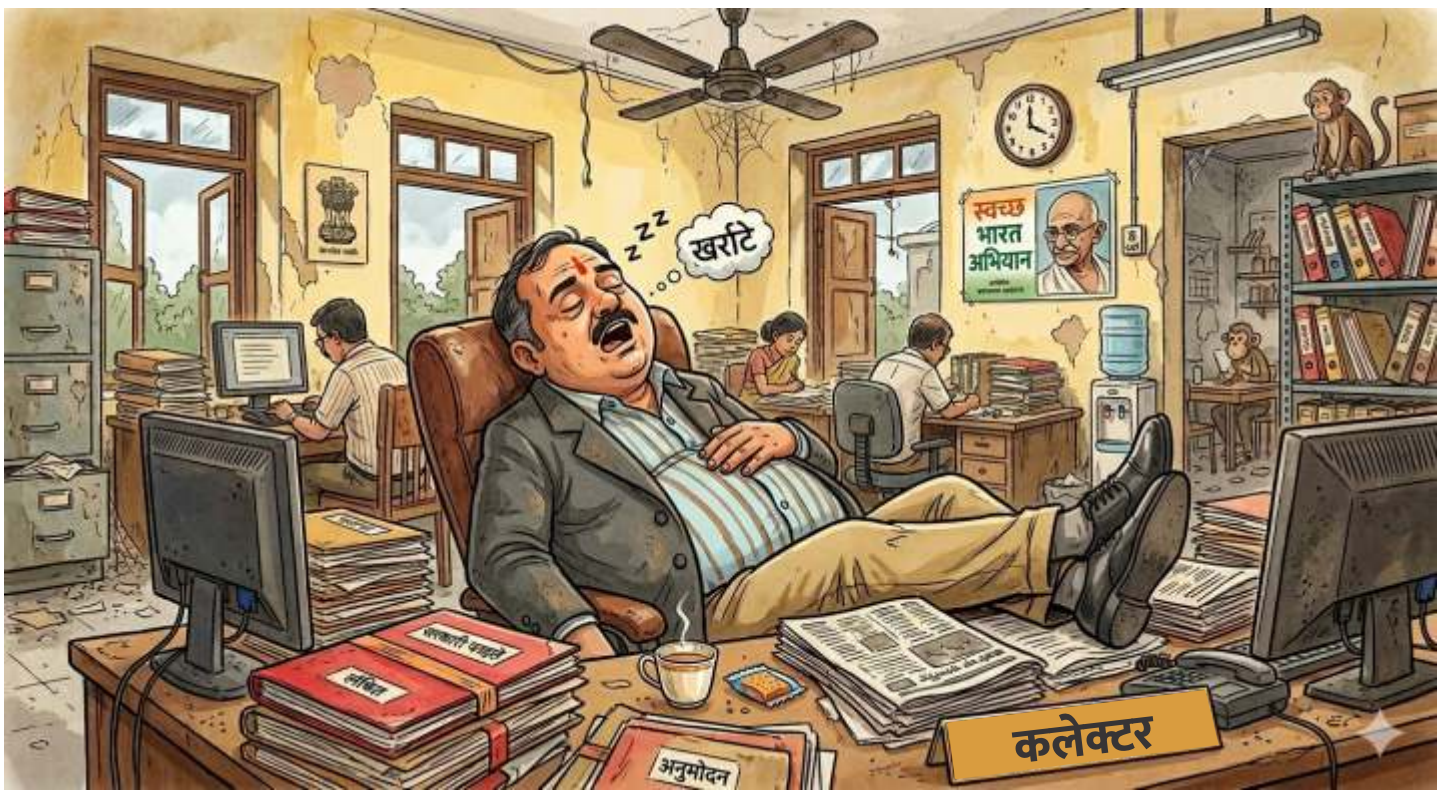

शहर सत्ता/रायपुर। प्रदेश में लोकसेवक सिर्फ नाम के रह गए हैं। छत्तीसगढ़ में इस वक्त 33 किताबी कलेक्टरों में से 28 कमजोर लगते हैं। ड्रेसिंग सेंस और युवा जोश है पर काम की समझ लोगों का सामना और समस्याओं से साकपा पड़े तो क्या करें नहीं पता। नतीजतन सीएम, सीएस और विभागीय सचिवों के किये धरे में यही पानी फेरने में लगे हैं। धान खरीदी की चुनौतियों के बाद अब अफीम-गांजे की फसल में फंसी सरकार को ये 28 लुंजपुंज कहीं निपटा नहीं दें। एडीएम बनाए बिना सीधे कलेक्टरी मिलने से भी यह दिक्कत आ रही है। इसलिए भी फरियादियों को पटवारी, आरआई और तहसीलदार, एसडीएम से जब न्याय नहीं मिल रहा तो वे कलेक्टर का रुख करते हैं। लेकिन कमजोर कलेक्टरी और एक सूत्रीय कार्य में लगे होने से मिलने वाले आवेदन को फिर उन्हीं पटवारी, आरआई और तहसीलदार, एसडीएम को मार्क करके कलेक्टर इतिश्री समझ रहे हैं।

लालफ़ीताशाही के शिकार फ़रियादी

जोगी, रमन शासनकाल में नौकरशाहों की लालफीताशाही इतनी हावी नहीं थी। तत्कालीन जीएडी सचिव मुकेश बंसल ने फर्स्ट व्हाट्सएप वार्निंग कलेक्टर-एसपी के कार्यशैली और समन्वय को लेकर किया था। मगर कोई खास बदलाव नहीं आया। फरियादियों को पटवारी, आरआई और तहसीलदार, एसडीएम से जब न्याय नहीं मिलता तो आम आदमी आवेदन लेकर कलेक्टर के पास पहुंचता रहा है और कलेक्टर लोग समस्या ठीक से सुने बिना उनके आवेदनों को नीचे रीडर को मार्क कर देते हैं। परेशानहाल फरियादी फिर वक्त, पैसा खर्च करके उन्हीं के चंगुल में पहुँच जा रहा है।

अफसर नहीं कर रहे हैं सीधा जन संवाद

अब तो ये हाल है कि अधिकांश कलेक्टरों को नेताओं या आम आदमी से सीधा संवाद और संपर्क नहीं रह गया है। सत्ता बदलते ही जनदर्शन लगाने का आदेश जारी करती हैं और अब तो जनदर्शन 'झनदर्शन' बन गया है। कालेकर दौरे पर ज्यादा दफ्तर पर काम बैठ रहे हैं। आते भी हैं तो उनसे मुलाकात करने वाले या तो मातहतों के सिफ़रिशबाजों या फिर दफ्तर का जैक लगाने वाले ही मिलते हैं। आम जनों की सुनवाई आवेदन मार्क-अनमार्क रह गया है।

प्रशासनिक बारीकियों से इसलिए हैं दूर

राज्य बनने के बाद आईएएस अधिकारियों को बिना एडीएम बनाए कलेक्टर बनाया जाने लगा। इस समय छत्तीसगढ़ में सबसे कम समय सिर्फ छह साल में कलेक्टरी मिल जा रही। उसमें एसडीएम की एक पोस्टिंग, उसके बाद जिला पंचायत सीईओ या निगम कमिश्नर और उसके बाद फिर सीधे जिले में डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट। इससे प्रशासनिक व्यवहारिकता और बारीकियों से वे अनजान रह जा रहे। विभागीय सचिव भी कमोबेश ऐसे ही हैं क्योंकि सचिवों का सब्जेक्ट की स्टडी न होना भी मुख्य वजह है।

लोक सेवकों में इनकी चर्चा अब भी

तत्कालीन मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के बाद ऐसे आईएएस भी हुए हैं जिन्हें लोग याद करते हैं। इनकी कार्यशैली, पब्लिक डीलिंग और सिर्फ सत्ता पक्ष ही नहीं विपक्षी दाल के नेता भी इन्हें मानते थे। नजीब जंग, सुनिल कुमार, अजय नाथ, देवराज बिरदी, विवेक ढांड, एमके राउत, आरपी मंडल जैसे दमदार कलेक्टरों कार्यशैली लोगों को आज भी याद है। कलेक्टर सुबोध सिंह, रजत कुमार, मुकेश बंसल, रोहित यादव, ओपी चौधरी, रजत बंसल, किरण कौशल जैसे वरिष्ठ आईएएस सुशासन की रीढ़ कहलाते हैं। फ़िलहाल रायपुर कलेक्टर गौरव सिंह समेत जशपुर कलेक्टर के कार्यों की सराहना भी हो रही है।

कलेक्टरों की भी हो बायोमीट्रिक अटेंडेंस

छत्तीसगढ़ के 33 कलेक्टरों के वर्किंग ऑवर की समीक्षा और बायोमीट्रिक अटेंडेंस होनी चाहिए। दफ्तर में बैठने से लेकर दिनभर किये गए दौरे और फरियादियों की सुनवाई से लेकर उनके वर्किंग ऑवर का हिसाब-किताब रखने से प्रशासनिक कसावट आएगी। जैसे छत्तीसगढ़ के मंत्रालय में एक जनवरी से बायोमेट्रिक अटेंडेंस लागू कर दिया गया है। इसी तर्ज पर जीएडी को कलेक्टरों के आने-जाने का हिसाब भी रखना चाहिए। ताकि आम फरियादी कोई भी सरकार के वेबसाइट पर जाकर देख सकेगा कि कितने अफसर कितने बजे तक ऑफिस आते हैं और शाम को कितने बजे जाते हैं। फ़िलहाल यह व्यवस्था मंत्रालय के दोयम दर्जे के लिए ही की गई है।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक श्री सुकांत राजपूत द्वारा ए.आर. प्रिंटर्स, निरंकारी फर्नीचर के पीछे, पंडरी रायपुर से मुद्रित एवं शहरसत्ता, एस-15 प्रियदर्शिनी नगर, सेक्टर 1, मातृ-पितृ छाया अपार्टमेंट, रायपुर (छ.ग.), मोबाईल नं. 98271-81979, फोन नं. 0771-3158142, संपादक - सुकांत राजपूत (पीआरबी एक्ट के तहत समाचार के लिए जिम्मेदार), महाप्रबंधक - प्रदीप चंद्रवंशी (मो. 70006-81023)। डाक पंजीयन - CG/RYP/DN/70/2025-27